रामायण उत्तरकाण्ड

गोस्वामि तुलसीदास कृत

जिसमें

महाराजाधिराज देवशिरोमणि श्रीरामचन्द्र जी का राजतिलक और पुत्रवत् प्रजापालन व धर्मोपदेश कथन कियागया है ॥

अत्यन्त शुद्धतापूर्वक

पांचवीं बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव, बी.ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा.

सन् १९१४ ई०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उत्तरकाण्ड ॥

श्लोक ॥

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् । पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् १ कोशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ पद्मयोनिशितिकण्ठवन्दितौ । जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ २ कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् । कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शंकरमनङ्गमोचनम् ॥ ३ ॥

दो० रहा एकदिन अवधिकर, अति आरत पुरलोग ।
जहँ तहँ शोचहिं नारिनर, कृशतनु राम वियोग ॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सबकेर ।
प्रभु आगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँ फेर ॥
कौशल्यादिक मातु सब, मन अनन्द अस होइ ।
आये प्रभु सिय अनुजयुत, कहन चहत अस कोइ ॥
भरत नयन भुज दक्षिण, फरकहिं बारहिं बार ।
जानि शकुन मन हर्षअति, लागे करन विचार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रहा एक दिन अवधि अधारा । समुझत मनदुख भयउ अपारा ॥
कारण कवन नाथ नहिं आये । जानिकुटिलप्रभुमोहिं बिसराये ॥
अहह धन्य लक्ष्मण बड़भागी । राम पदारविन्द अनुरागी ॥
कपटी कुटिल नाथ मोहिं चीन्हा । ताते नाथ सङ्ग नहिं लीन्हा ॥
जो करणी समुझैं प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्पशतकोरी ॥
जन अवगुण प्रभु मान न काऊ । दीनबन्धु अतिमृदुल सुभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिं राम शकुनशुभहोई ॥
बीते अवधि रहे जो प्राना । अधमकवनजगमोहिं समाना ॥

दो० राम विरह सागरमहँ, भरत मगन मन होत ।
विप्ररूप धरि पवनसुत, आइगये जिमि पोत ॥
बैठे देखि कुशासन, जटा मुकुट कृशगात ।
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात ॥

देखत हनूमान अति हर्षे । पुलकगात लोचन जल वर्षे ॥
मनमहँ बहुत भांति सुखमानी । बोले श्रवण सुधासम बानी ॥
जासु विरह शोचहु दिनराती । रटहु निरन्तर गुणगणपाती ॥
रघुकुलतिलक सुजनसुखदाता । आये कुशल देवमुनित्राता ॥
रिपुरणजीति सुयश सुरगावत । सीताअनुज सहित प्रभुआवत ॥
सुनत वचन बिसरे सब दूखा । तृषावन्त जनु पाय पियूखा ॥
को तुम तात कहां ते आये । मोहिं परमप्रिय वचन सुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना । नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भेंटे उठि सादर ॥
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता । नयनस्रवतजलपुलकितगाता ॥
कपि तव दरश सकल दुख बीते । मिले आजु मोहिं रामसप्रीते ॥
बार बार पूछी कुशलाता । तोकहँ काह देउँ सुनु भ्राता ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहि सन्देश सरिस जगमाहीं । करि विचार देखा कछु नाहीं ॥
नाहिंन उऋण तात मैं तोहीं । अब प्रभुचरित सुनावहु मोहीं ॥
तब हनुमान नाइ पद माथा । कहेसिसकलरघुपतिगुणगाथा ॥
कहु कपि कबहुँ कृपालु गुसाईं । सुमिरत मोहिं दास की नाईं ॥
छं० निजदास ज्यों रघुवंशभूषण कबहुँ मम सुमिरण कस्यो ।
सुनिभरतवचनविनीतअति कपिपुलकतनुचरणनपस्यो ॥
रघुवीर निजमुख जासुगुणगण कहत अगजगनाथजो ।
काहे न होइ विनीत परम पुनीत सद्गुण सिन्धुसो ॥
दो० राम प्राणप्रिय नाथ तुम, सत्यवचन मम तात ।
पुनि पुनि मिलत भरत सन, प्रेम न हृदय समात ॥
सो० भरत चरण शिर नाइ, तुरतगये कपि रामपहँ ।
कही कुशल सब जाइ, हर्षिचले प्रभु यानचढ़ि ॥
हर्षि भरत कोशलपुर आये । समाचार सब गुरुहिं सुनाये ॥
पुनि मन्दिरमहँ बात जनाई । आवत नगर कुशल रघुराई ॥
सुनत सकल जननी उठि धाईं । कहि प्रभुकुशलभरत समुझाईं ॥
समाचार पुरवासिन पाये । नर अरु नारि हर्षि उठि धाये ॥
दधि दूर्वा रोचन फल फूला । नव तुलसीदल मङ्गल मूला ॥
भरिभरि थार हेम वर भामिनि । गावत चलीं सिन्धुरगामिनि ॥
जो जैसहिं तैसहिं उठि धावहिं । बाल वृद्ध कोउ संग न लावहिं ॥
एक एक सन पूछहिं धाई । तुम देखे दयालु रघुराई ॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी । भई सकल शोभा की खानी ॥
भा सरयू अति निर्मल नीरा । बहै सुहावनि त्रिविध समीरा ॥
दो० हर्षित गुरुपुरजन अनुज, भूसुर वृन्द समेत ।
चले भरत अति प्रेममन, सम्मुख कृपानिकेत ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन विमान।
देखि मधुर स्वर हर्षित, करहिं सुमङ्गल गान॥
राका शशि रघुपति पुरी, सिन्धु देखि हर्षान।
बढ़े कोलाहल करत जनु, नारि तरङ्ग समान॥

रविकुल कमल दिवाकर आवत। नगर मनोहर कपिन देखावत॥
सुन कपीश अङ्गद लङ्केशा। पावनि पुरी रुचिर यह देशा॥
यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना। वेद पुराण विदित जगजाना॥
अवधसारिसप्रिय मोहिं न सोऊ। यह प्रसङ्ग जानै कोउ कोऊ॥
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिशि सरयू बह पावनि॥
जो मज्जहिं सो बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा॥
अतिप्रिय मोहिं इहां के बासी। मम धामदा पुरी सुखरासी॥
हर्षे कपि सुनि प्रभु की बानी। धन्य अवध जेहि राम बखानी॥

दो० आवत देखे लोग सब, कृपासिन्धु भगवान।
नगर निकट प्रभु आयउ, उतरा भूमि विमान॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं, तुम कुबेर पहँ जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो, हर्षविरह अतिताहु॥

आये भरत संग सब लोगा। कृशतनु श्रीरघुवीर वियोगा॥
वामदेव वशिष्ठ मुनिनायक। देखा प्रभु महिधरि धनुशायक॥
धाइ धरे गुरु चरण सरोरुह। अनुजसहितअतिपुलकतनोरुह॥
भेंटे कुशल पूछि मुनिराया। हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया॥
सकल द्विजनकहँ नायउमाथा। धर्मधुरन्धर रघुकुल नाथा॥
गहेभरत पुनि प्रभुपद पङ्कज। नवहिंजिनहिंशंकरसुरमुनिअज॥
परे भूमि नहिं उठत उठाये। बलकरि कृपासिन्धु उरलाये॥
श्यामलगात रोम भये ठाढ़े। नवराजीव नयनजल बाढ़े॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चित्र नं० १ रा० उ० सफ़ा ५

श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण और सीता जीको वानरादि गणों के संयुक्त अयोध्या जीमें आकर भरत शत्रुहन आदि अयोध्यावासियोंसे परस्पर मिलाप ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुलगुरु वशिष्ठजी करके श्रीरामचन्द्रजी को राज्यतिलक करना और नारद शिव ब्रह्मादि देवताओं की अत्यन्त हर्ष करके सिंहासनस्थ श्रीरामचन्द्र की स्तुति करना॥

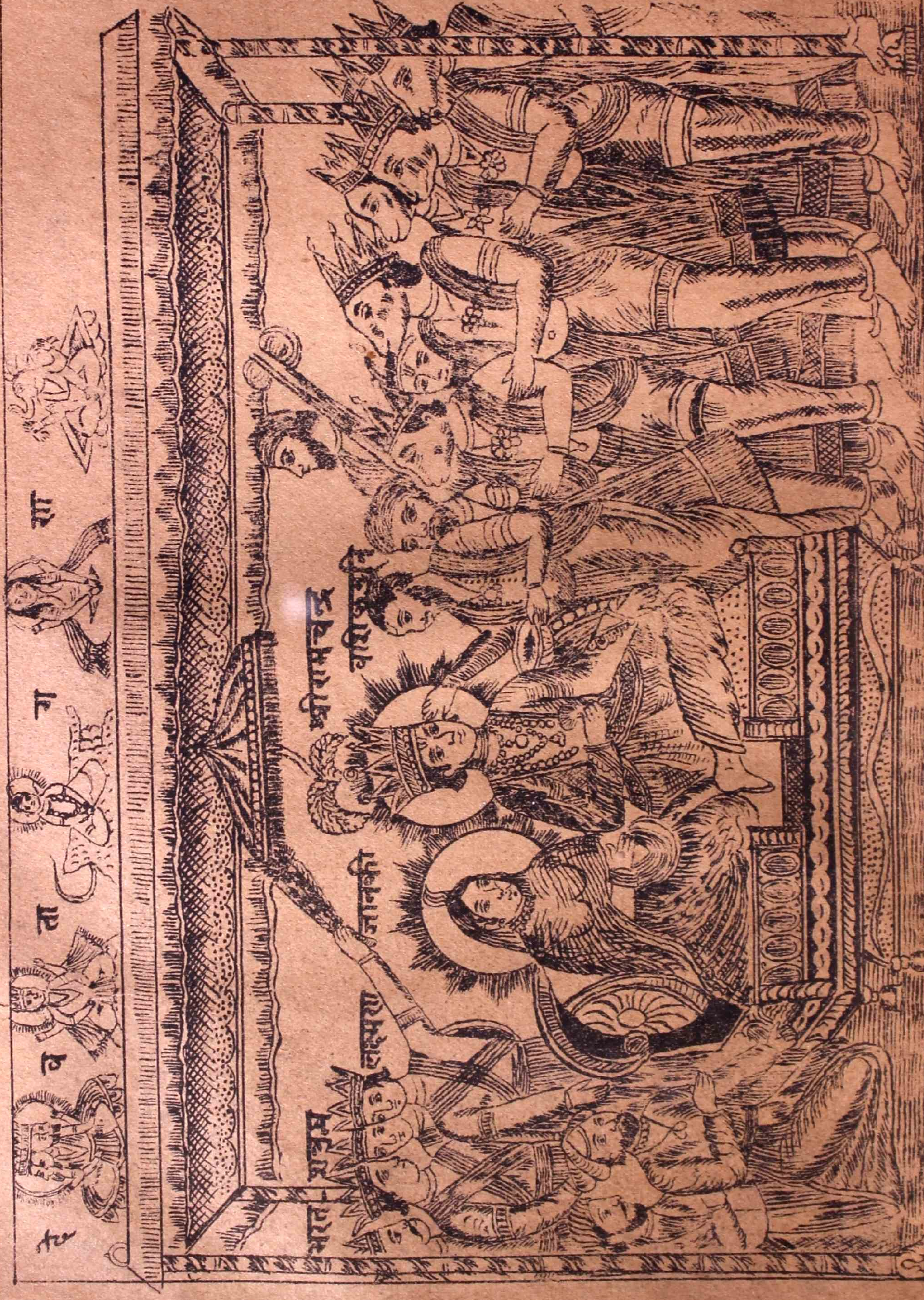

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छं० राजीव लोचन स्रवत जल तनु ललित पुलकावलिबनी ।
अतिप्रेम हृदय लगाय अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवनधनी ॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मोपहँ जात नहिं उपमा कही ।
जनु प्रेम अरु शृङ्गार तनुधरि मिलत वर सुखमा लही ॥
पूछत कृपानिधि कुशल भरतहिं वचन वेगि न आवई ।
सुनि शिवा सो सुख वचन मनते भिन्न जान न पावई ॥
अब कुशल कोशलनाथ आरत जानि जन दरशन दियो ।
बूड़त विरहवारिधि कृपानिधि काढ़िमोहिं करगहि लियो ॥

दो० पुनि प्रभु हर्षित शत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ ।
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि, प्रेम न हृदय समाइ ॥

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे । दुसह विरह सम्भव दुख मेटे ॥
सीता चरण भरत शिरनावा । अनुज समेत परम सुखपावा ॥
प्रभु विलोकि हरषे पुरबासी । जनितवियोगविपतिसबनासी ॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी ॥
अमित रूप प्रकटे तेहि काला । यथायोग्य मिलिसबहिंकृपाला ॥
कृपादृष्टि सब लोग विलोकी । किये सकलनरनारिविशोकी ॥
क्षणमहँ सबहिं मिले भगवाना । उमा मर्म यह काहु न जाना ॥
यहिविधिसबहिं सुखीकरि रामा । आगे चले शील गुणधामा ॥
कौशल्यादि मातु सब धाईं । निरखि बच्छ जनु धेनु लवाईं ॥

छं० जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन वन परवश गईं ।
दिन अन्त पुररुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भईं ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटे वचन मृदु बहुविधि कहे ।
गइविषमविपतिवियोगभवतिन्ह हर्षसुखअगणित लहे ॥

दो० भेंटेउ तनय सुमित्रा, रामचरण रति जानि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रामहिं मिलत केकयी, हृदय बहुत सकुचानि ॥
लक्ष्मण सब मातन मिले, हर्ष आशिष पाइ ।
केकयिकहँपुनिपुनिमिले, मनकर क्षोभ न जाइ ॥
सासुन सबहिं मिली वैदेही । चरणन लागि हर्ष अतितेही ॥
देहिं अशीष पूछि कुशलाता । होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥
सब रघुपति पदकमलविलोकी । मङ्गल जानि नयनजल रोकी ॥
कनक थार आरती उतारहिं । बारबार प्रभुगात निहारहिं ॥
नाना भांति निछावरि करहीं । परमानन्द हर्ष उर भरहीं ॥
कौशल्या पुनि पुनि रघुवीरहिं । चितवहिं कृपासिन्धुरणधीरहिं ॥
हृदय विचारति बारहिं बारा । कवन भांति लङ्कापति मारा ॥
अतिसुकुमार युगल मम बारे । निशिचर सुभट महाबलभारे ॥
दो० लक्ष्मण अरु सीतासहित, प्रभुहिं विलोकहिं मात ।
परमानन्द मगन मन, पुनि पुनि पुलकितगात ॥
लङ्कापति कपीश नल नीला । जामवन्त अङ्गद शुभशीला ॥
हनुमदादि सब वानर वीरा । धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥
भरत सनेह शील व्रत नेमा । सादर सब बरणहिं अतिप्रेमा ॥
देखि नगरबासिन की रीती । सकल सराहहिं प्रभुपद प्रीती ॥
पुनि रघुपति निजसखा बुलाये । मुनिपदलागहुसबहिं सिखाये ॥
गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य हमारे । इनकी कृपा दनुज रण मारे ॥
ये सब सखा सुनिय मुनि मेरे । भये समर सागर कहँ बेरे ॥
मम हित लागि जन्म इन हारे । भरतहुते मोहिं अधिक पियारे ॥
सुनि प्रभु वचन मगन सब भये । निमिषनिमिषउपजतसुखनये ॥
दो० कौशल्या के चरणन, पुनि तिन नायउमाथ ।
आशिषदीन्ह हर्षिहिय, तुमप्रिय जिमि रघुनाथ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुमन वृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुखकन्द ।
चढ़े अटारिन देखहीं, नगर नारि नर वृन्द ॥
कञ्चन कलश विचित्र सँवारे । सबनिधरेसाजि निज निजद्वारे ॥
बन्दनवार पताका केतू । सबनि बनाये मङ्गल हेतू ॥
वीथिन सकल सुगन्ध सिंचाये । गजमणि रचि बहुचौक पुराये ॥
नानाभांति सुमङ्गल साजे । हर्ष निशान नगर बहु बाजे ॥
जहँतहँ नारि निछावरि करहीं । देहिं अशीष हर्ष उर भरहीं ॥
कञ्चन थार आरती नाना । युवती साजि करहिं कलगाना ॥
करहिं आरती आरतहरकी । रघुकुलकमलविपिनदिनकरकी ॥
पुर शोभा सम्पति कल्याना । निगम शेष शारदा बखाना ॥
तेऊ चरित देखि ठगि रहहीं । उमातासुगुण नरकिमि कहहीं ॥
दो० नारि कुमुदिनी अवधसर, रघुपति विरह दिनेश ।
अस्त भये विकसित भईं, निरखि राम राकेश ॥
होहिंशकुनशुभविविधविधि, बाजहिं गगन निशान ।
पुर नर नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान ॥
प्रभु जाना केकयी लजानी । प्रथम तासु गृह गये भवानी ॥
ताहिप्रबोधि बहुत सुखदीन्हा । तबनिज भवनगवनप्रभुकीन्हा ॥
कृपासिन्धु जब मन्दिर गयऊ । पुर नर नारि सुखी सब भयऊ ॥
गुरु वशिष्ठ द्विजलिये बुलाई । आजु सुघरी सुदिन सुखदाई ॥
सब द्विज देहु हर्षि अनुशासन । रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन ॥
मुनि वशिष्ठ के वचन सुहाये । सुनत सकल विप्रन मनभाये ॥
कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका । जग अभिराम राम अभिषेका ॥
अब मुनिवर विलम्ब नहिं कीजै । महाराज कहँ तिलक करीजै ॥
दो० तब मुनि कहेउ सुमन्त्रसन, तुरत चले शिर नाइ ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रथ अनेक गज बाजि बहु, सकल सवाँरे जाइ ॥
जहँ तहँ धावन पठे पुनि, मङ्गल द्रव्य मँगाइ ।
हर्ष समेत वशिष्ठ पद, पुनि शिर नायउआइ ॥

अवधपुरी अतिरुचिर बनाई । देवन सुमन वृष्टि भरि लाई ॥
राम कहा सेवकन बुलाई । प्रथमसखन अन्हवावहु जाई ॥
सुनत वचन जन जहँ तहँ धाये । सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
पुनि करुणानिधि भरत हँकारे । निज कर जटा राम निरवारे ॥
अन्हवाये पुनि तीनिहु भाई । भक्तबछल कृपालु रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । शेष कोटिशत सकहिं न गाई ॥
पुनि निज जटा राम निरवाये । मुनि अनुशासन पाइअन्हाये ॥
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे । अङ्ग अनङ्गकोटि छवि लाजे ॥

दो० सासुन सादर जानकिहिं, मज्जन तुरत कराइ ।
दिव्य वसन वर भूषणनि, अँग अँग सजे बनाइ ॥
राम वाम दिशि शोभित, रमा रूप गुणखानि ।
देखि सासु सब हर्षित, जन्मसुफल निजजानि ॥
सुनु खगेश तेहि अवसर, ब्रह्मा शिव मुनि वृन्द ।
चढ़ि विमान आये सकल, सुर देखन सुखकन्द ॥

प्रभु विलोकि मुनिमन अनुरागा । तुरत दिव्य सिंहासन मांगा ॥
रविसम तेज बरणि नहिं जाई । बैठे राम द्विजन शिरनाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई । देखि प्रहर्षे मुनि समुदाई ॥
वेद मन्त्र द्विजवर उच्चारे । नभसुर मुनि जयजयतिपुकारे ॥
प्रथमतिलकवशिष्ठमुनि कीन्हा । पुनिसब विप्रनआयसु दीन्हा ॥
सुत विलोकि हर्षित महतारी । बार बार आरती उतारी ॥
विप्रनदान विविध विधि दीन्हें । याचक सकल अयाचक कीन्हें ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सिंहासन पर त्रिभुवन साईं । देखि सुरन दुन्दुभी बजाईं ॥

छं० नभ दुन्दुभी बाजहिं विपुल गन्धर्व किन्नर गावहीं ।
नाचहिं अप्सरावृन्द परमानन्द सुरमुनि पावहीं ॥
भरतादि अनुज विभीषणाङ्गद हनुमदादि समेत जे ।
गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म शक्ति बिराजते ॥
सियसहित दिनकरवंशभूषण काम बहु छवि सोहहीं ।
नव अम्बुधर वरगात अम्बर पीत मुनिमन मोहहीं ॥
मुकुटाङ्गदादि विचित्र भूषण अङ्ग अङ्गन प्रति सजे ।
अम्भोज नयन विशाल उरभुज धन्य नर निरखन्त जे ॥

दो० यह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेश ।
बरणै शारद शेष श्रुति, सो रस जानु महेश ॥
भिन्न भिन्न अस्तुतिकरि, गे सुर निजनिज धाम ।
बन्दी वेष वेद धरि, आये जहँ श्रीराम ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान ।
लखा न काहू मर्म कछु, लगे करन गुणगान ॥

छं० जय सगुण निर्गुण रूप राम अनूपभूप शिरोमने ।
दशकन्धरादि प्रचण्डनिशिचर प्रबलखल भुजबलहने ॥
अवतार नर संसार भार विभञ्जि दारुण दुख दहे ।
जय प्रणतपाल दयाल प्रभु संयुक्तशक्ति नमामहे ॥
तव विषममायावश सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भवपन्थभ्रमित श्रमितदिवसनिशि कालकर्मगुणन भरे ॥
जेहि नाथकरि करुणा विलोकहु त्रिविध दुख ते निर्वहे ।
भव खेद छेदन दक्ष हम कहँ रक्ष राम नमामहे ॥
जे ज्ञानमान विमत्त तव भवहरणि भक्ति न आदरी ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ते पाइ सुरदुर्लभपदादपि परत हम देखत हरी ॥
विश्वासकरि सब आश परिहरि दास तव जे है रहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भवनाथ राम नमामहे ॥
जे चरण शिव अज पूज्यरज शुभ परसि मुनिपत्नीतरी ।
नख निर्गता सुरवन्दिता त्रैलोक्य पावनि सुरसरी ॥
ध्वजकुलिशअंकुशकञ्जयुतपद फिरत कराटक जिनलहे ।
पदकञ्ज द्वन्द्व मुकुन्द राम रमेश नित्य भजामहे ॥
अव्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।
षट कन्ध शाखा पञ्चविंश अनेक पर्ण सुमनघने ॥
फलयुगलविधिकटुमधुरबेलि अकेलि जेहि आश्रितरहे ।
पल्लवित फूलत नवल नित संसार विटप नमामहे ॥
जे ब्रह्म अज अद्वैत अनुभव गम्य मनपर ध्यावहीं ।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुणयश नित गावहीं ॥
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह वर माँगहीं ।
मन कर्म वचन विकार तजि तव चरण हम अनुरागहीं ॥

दो० सबके देखत वेदनहु, बिनती कीन्ह उदार ।
अन्तर्धान भये तब, गये ब्रह्म आगार ॥
वैनतेय सुनु शंभु तब, आये जहँ रघुवीर ।
विनय करत गद्गद गिरा, पूरित पुलक शरीर ॥

छं० जयराम रमारमणं शमनं । भवतापभयाकुल पाहि जनं ॥
अवधेश सुरेश रमेश विभो । शरणागत माँगत पाहि प्रभो ॥
दशशीश विनाशन बीसभुजा । कृतदूरि महामहि भूरि रुजा ॥
रजनीचर वृन्द पतङ्ग रहे । शरपावक तेज प्रचराड दहे ॥
महिमराडल मराडन चारुतरं । धृत शायक चाप निषङ्गवरं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मद मोह महाममता रजनी । तमपुञ्ज दिवाकर तेजअनी ॥
मनुजाद किरात निपात किये । मृगलोग कुभोग शरे न हिये ॥
हितनाथ अनाथनि पाहि हरे । विषयावश पामर भूलिपरे ॥
बहु रोग वियोगन लोग हये । भवदंघ्रि निरादर के फल ये ॥
भवसिन्धु अगाध परे नर ते । पदपङ्कज प्रेम न जे करते ॥
अतिदीन मलीन दुखी नितहीं । जिनके पदपङ्कज प्रीति नहीं ॥
अवलम्ब भवन्त कथा जिनके । भवभीति कदापि नहीं तिनके ॥
नहिं राग न रोष न मान मदा । तिनके सम वैभव वा विपदा ॥
मुनि त्यागत योग भरोस सदा । इहिते तव सेवक होत मुदा ॥
करि प्रेम निरन्तर नेम लिये । पदपङ्कज सेवत शुद्ध हिये ॥
सम मान निरादर आदरही । सोइसन्तसुखी बिचरन्त मही ॥
मुनि मानस पङ्कज भृङ्ग भजे । रघुवीर महारणधीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महामद मान अरी ॥
गुण शील कृपा परमायतनं । प्रणमामि निरन्तर श्रीरमनं ॥
रघुनन्दनिकन्दन द्वन्दघनं । महिपाल विलोकिय दीनजनं ॥

दो० बार बार वर माँगौं, हर्षि देहु श्रीरङ्ग ।
पद सरोज अनपावनी, भक्ति सदा सतसङ्ग ॥
बरणि उमापति रामगुण, हर्षि गये कैलास ।
तब प्रभु कपिन दिवाये, सबविधि सुखप्रद बास ॥

सुनुखगपति यहकथा सुहावनि । त्रिविधतापभव दोषनशावनि ॥
महाराजकर शुभ अभिषेका । सुनत लहहिं नर विरतिविवेका॥
जे सकामनर सुनहिं जे गावहिं । सुखसंपति नानाविधि पावहिं॥
सुरदुर्लभ सुखकरि जगमाहीं । अन्तकाल रघुपतिपुर जाहीं ॥
सुनहिं विमुक्त विरत अरु बिषई । लहहिंभक्ति सुखसंपति नितई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खगपति राम कथा मैं बरणी । सुमति विलासत्रासदुखहरणी ॥
विरति विवेक भक्ति दृढ़ करणी । मोहनदी कहँ सुन्दर तरणी ॥
नितनव मङ्गल कोशल पुरी । हर्षित रहहिं लोग सब कुरी ॥
नित नव प्रीति रामपद पङ्कज । सेवत जेहिशंकरसुरमुनि अज ॥
मंगन बहु प्रकार पहिराये । द्विजन दान नानाविधि पाये ॥

दो० परमानन्द मगन कपि, सबकहँ प्रभुपद प्रीति ।
जातन जानेउ दिवसनिशि, गये मास षट बीति ॥

बिसरे गृह सपने सुधि नाहीं । जिमि परद्रोह सन्तमनमाहीं ॥
तब रघुपति सब सखा बुलाये । आइ सबहिं सादर शिरनाये ॥
प्रेम समेत निकट बैठारे । भक्तसुखद मृदु वचन उचारे ॥
तुम अतिकीन्ह मोरि सेवकाई । मुखपर केहिविधि करौं बड़ाई ॥
ताते मोहिं तुम अतिप्रियलागे । ममहितलागिभवनसुखत्यागे ॥
अनुज राज सम्पति वैदेही । देह गेह परिवार सनेही ॥
सबमोहिंप्रियनहिंतुमहिंसमाना । मृषा न कहौं मोर यह बाना ॥
सब कहँ प्रिय सेवक यह नीती । मोरे अधिक दासपर प्रीती ॥

दो० अब गृह जाहु सखा सब, भजहु मोहिं दृढ़ नेम ।
सदा सर्वगत सर्वहित, जानि करेहु अतिप्रेम ॥

सुनि प्रभुवचन मगन सब भये । को हम कहाँ बिसरि तनु गये ॥
इकटक रहे जोरिकर आगे । कहिनसकतकछुअतिअनुरागे ॥
परमप्रीति तिनकर प्रभु देखी । कहाविविधविधिज्ञानविशेखी ॥
प्रभुसम्मुख कछु कहै न पारहिं । पुनिपुनिचरणसरोजनिहारहिं ॥
तब प्रभु भूषण वसन बनाये । नाना रङ्ग अनूप सुहाये ॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराये । भरत वसन निजहाथ बनाये ॥
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये । लङ्कापति रघुपति मनभाये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अङ्गद बैठि रहे नहिं डोले । प्रीतिजानि प्रभुताहि न बोले ॥
दो० जामवन्त नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ ।
हियधरि रामस्वरूप सब, चले नाय पदमाथ ॥
तब अङ्गद उठि नाइशिर, सजलनयनकरजोरि ।
अतिविनीत बोले वचन, मनहुँ प्रेमरस बोरि ॥
सुन सर्वज्ञ कृपासुखसिन्धो । दीन दयाकर आरतबन्धो ॥
मरती बार नाथ मोहिं बाली । गयो तुम्हारे पगतर घाली ॥
अशरण शरण बिरद सम्भारी । मोहिं जनितजहु भक्तभयहारी ॥
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता । जाउँ कहाँ तजिपद जलजाता ॥
तुमहिं विचारि कहहु नरनाहा । प्रभुतजि भवनकाजममकाहा ॥
बालक अबुध ज्ञान बलहीना । राखहु शरण जानिजनदीना ॥
नीच टहल गृहकी सब करिहौं । पदविलोकि भवसागरतरिहौं ॥
अस कहि चरण परे प्रभु पाहीं । अबजनिनाथ कहहुगृहजाहीं ॥
दो० अङ्गद वचन विनीत सुनि, रघुपति करुणासीव ।
प्रभु उठाय उर लायऊ, सजल नयन राजीव ॥
निजउरमाला वसन मणि, बालितनय पहिराय ।
बिदा किये भगवान तब, बहुप्रकार समुझाय ॥
भरत अनुज सौमित्रि समेता । पठवन चले भक्तकृतचेता ॥
अङ्गद हृदय प्रेम नहिं थोरा । फिरिफिरिचितवतप्रभुकीओरा ॥
बार बार करि दण्ड प्रणामा । मनअसरहनकहहिंमोहिंरामा ॥
रामविलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरिसुमिरिशोचतहँसिमिलनी ॥
प्रभुरुख देखि विनय बहुभाखी । चले हृदय पदपङ्कज राखी ॥
अति आदर सब कपि पहुँचाये । भाइन सहित राम फिरि आये ॥
तब सुग्रीव चरण गहि नाना । भाँतिविनयकीन्हीं हनुमाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिन दश करि रघुपतिपदसेवा । तब फिरि चरण देखिहौं देवा ॥
पुण्यपुञ्ज तुम पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥
असकहि कपिपति चले तुरन्ता । अङ्गद कहेउ सुनहु हनुमन्ता ॥

दो० करेहु दण्डवत प्रभु सन, तुमहिं कहौं करजोरि ।
बार बार रघुनायकहिं, सुरति करायहु मोरि ॥
असकहि चलेउबालिसुत, फिरि आये हनुमन्त ।
तासु प्रीति प्रभुसन कही, मगनभये भगवन्त ॥
कुलिशहुचाहककठोरअति, कोमलकुसुमहु चाहि ।
चित खगेश रघुनाथअस, समुझिपरै कहु काहि ॥

पुनि कृपालुलिये बोलिनिषादा । दीन्हेउ भूषण वसन प्रसादा ॥
जाहु भवन मम सुमिरण करहू । मनक्रमवचन धर्म अनुसरहू ॥
तुम मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहहु पुर आवत जाता ॥
वचन सुनत उपजा सुखभारी । परेउ चरण लोचन भरिवारी ॥
चरणकमल उरधरि गृहआवा । प्रभुप्रभाव परिजनहिं सुनावा ॥
रघुपति चरित देखि पुरबासी । पुनिपुनि कहहिंधन्यसुखरासी ॥
राम राज बैठे त्रय लोका । हर्षित भयउ गयउ सब शोका ॥
वैर न कर काहूसन कोई । राम प्रताप विषमता खोई ॥

दो० वर्णाश्रम निजनिज धरम, निरत वेदपथ लोग ।
चलहिंसदापावहिं सुखहिं, नहिंभयशोक न रोग ॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा । रामराज नहिं काहुहिं व्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती । चलहिं सुधर्म निरतश्रुतिनीती ॥
चारिउ चरण धर्म जग माहीं । पूरिरहा सपनेहुँ अघ नाहीं ॥
रामभक्ति रत नर अरु नारी । सकलपरम गतिके अधिकारी ॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउँ पीरा । सब सुन्दर सब निरुज शरीरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लक्षणहीना ॥
सब निर्दम्भ धर्मरति धरणी । नर अरु नारि चतुर शुभकरणी ॥
सब गुणज्ञ सब पण्डित ज्ञानी । सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी ॥
दो० रामराज्य विहगेश सुनु, सचराचर जग माहिं ।
काल कर्म स्वभाव गुण, कृत दुख काहुहि नाहिं ॥
भूमि सप्त सागर मेखला । एक भूप रघुपति कोशला ॥
भुवन अनेक रोम प्रति जासू । यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी । यह वर्णत हीनता घनेरी ॥
सोउ महिमा खगेश जिन जानी । फिरियहचरिततिनहुँरतिमानी ॥
सोउ जानेकर फल यह लीला । कहहिंमहामुनिसुमतिसुशीला ॥
राम राज्यकर सुख सम्पदा । बरणि न सकहिं फणीशशारदा ॥
सब उदार सब परउपकारी । द्विजसेवक सब नर अरु नारी ॥
एक नारि व्रत रत नर झारी । ते मन वच क्रम पतिहितकारी ॥
दो० दण्ड यतिनकर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहिं मनहिं सुनिय अस, रामचन्द्रके राज ॥
फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन । रहहिं एकसँग गज पञ्चानन ॥
खग मृग वैर सहज बिसराई । सबनि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
कूजहिं खग मृग नानावृन्दा । अभयचरहिंवनकरहिं अनन्दा ॥
शीतल सुरभि पवन बह मन्दा । गुञ्जत अलि लेचलु मकरन्दा ॥
लता विटप मांगे द्रुम द्रवहीं । मनभावते धेनु पय स्रवहीं ॥
शशि सम्पन्न सदा रह धरणी । त्रेता भइ सतयुग की करणी ॥
प्रकटे गिरि नाना मणि खानी । जगदातमा भूप पहिंचानी ॥
सरिता सकल बहैं वर वारी । शीतल अमलस्वादुसुखकारी ॥
सागर निज मर्यादा रहहीं । डारहिं रत्न तटनि नर लहहीं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सरसिजसंकुल सकल तड़ागा। अतिप्रसन्नदशादिशाविभागा ॥
दो० विधु महिपूर मयूखन, रवि तप तेज न काज।
मांगे वारिद देहिं जल, रामचन्द्र के राज ॥
कोटिन वाजिमेध प्रभु कीन्हें। अमितदान विप्रनकहँ दीन्हें ॥
श्रुतिपथपालक धर्मधुरन्धर। गुणातीत अरु भोग पुरन्दर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता। शोभाखानि सुशील विनीता ॥
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई। सेवति चरणकमल मनलाई ॥
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी। सब प्रकार सेवाविधि गुनी ॥
निजकर गृहपरिचर्या करहीं। रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं ॥
जेहिविधिकृपासिन्धुसुखमानहिं। सोइ सियसेवाविधिउरआनहिं ॥
कौशल्यादि सासु गृह माहीं। सेवहिं सबै मान मद नाहीं ॥
उमा रमा ब्रह्माणि वन्दिता। जगदम्बा सन्तत अनिन्दिता ॥
दो० जाकी कृपाकटाक्ष सुर, चाहत चितवनि सोइ।
राम पदारविन्द रत, रहति स्वभावहिं जोइ ॥
सेवहिं सानुकूल सब भाई। रामचरण रति प्रीति सुहाई ॥
प्रभुपदकमल विलोकत रहहीं। कबहुँ कृपालुहमहिंकछुकहहीं ॥
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती। नानाभाँति सिखावहिं नीती ॥
हर्षित रहहिं नगरके लोगा। करहिं सकल सुरदुर्लभ भोगा ॥
अहनिशि विधिहिमनावतरहहीं। श्रीरघुवीर चरणरति चहहीं ॥
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये। लव कुश वेद पुराणन गाये ॥
दोउविजयीविनयी अतिसुन्दर। हरिप्रतिबिम्बमनहुँगुणमन्दिर ॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे। भये रूप गुण शील घनेरे ॥
दो० ज्ञानगिरा गोतीत अज, मायागुण गोपार।
सोइ सच्चिदानन्द घन, करत चरित्र अपार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रातकाल सरयू करि मज्जन । बैठहिं सभासङ्ग द्विजसज्जन ॥
वेद पुराण बशिष्ठ बखानहिं । सुनहिंराम यद्यपि सबजानहिं ॥
अनुजन संयुत भोजन करहीं । देखिसकलजननी सुख भरहीं ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
पूछहिं बैठि रामगुण गाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥
सुनतविमलगुणअतिसुखपावहिं । बहुरिबहुरि कै विनय सुनावहिं ॥
सबके गृह गृह होयँ पुराना । रामचरित सुन्दर विधिनाना ॥
नरअरुनारिरामगुण गानहिं । करहिंदिवसनिशिजातनजानहिं ॥
दो० अवधपुरी बासिन्ह कर, सुखसम्पदा समाज ।
सहसशेषनहिंकहि सकहिं, जहँ नृप रामबिराज ॥
नारदादि सनकादि मुनीशा । दर्शन लागि कोशलाधीशा ॥
दिनप्रति सकलअयोध्याआवहिं । देखि नगर विराग बिसरावहिं ॥
रत्नजटित मणि कनक अटारी । नाना रङ्ग रुचिर गच ढारी ॥
पुर चहुँ पास कोट अतिसुन्दर । रचे कँगूरा रङ्ग रङ्ग वर ॥
नव गृह सुन्दर निकर बनाई । मनहुँ घेरि अमरावति आई ॥
महि बहुरूप रुचिर गच कांचा । जो विलोकिमुनिवरमनरांचा ॥
धवल धाम ऊपर नभ चुम्बत ।कलशमनहुँशशिरविद्युतिनिन्दत॥
बहु मणिरचित झरोखन भ्राजैं । गृहगृहप्रति मणिदीप बिराजैं ॥
छं०मणिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची ।
सुन्दर मनोहरमन्दिरायत अजिर अतिफटिकनखची ॥
मणिखम्भभीति विरञ्चिविरचित कनकमाणिमरकतरचे ।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाय बहु बज्रन खचे ॥
दो० चारु चित्रशाला अमित, गृह गृह रचे बनाइ ।
राम धाम जो निरखत, मुनि मन लेत चुराइ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुमन वाटिका सबहिं लगाई । विविधभांति करि यतनबनाई ॥
लता ललित बहु भांति सुहाई । फूलहि सदा बसन्त कि नाई ॥
गुञ्जत मधुकर मुखर मनोहर । मारुतात्रिविध सदा बह सुन्दर ॥
नाना खग बालकन जिआये । बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत । भवनन पर शोभा अतिपावत ॥
जहँ तहँ देखहिं निजपरिछाहीं । बहुविधि कूजहिं नृत्य कराहीं ॥
शुक सारिका पढ़ावहिं बालक । कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
राजद्वार सबही विधि चारू । वीथी चौहट रुचिर बजारू ॥
छं०बाजार रुचिर न बनै बरणत बस्तु बिनु गथ पाइये ।
जहँ भूप रमानिवास तहँ की सम्पदा किमि गाइये ॥
बैठे बजाज सराफ बणिक अनेक मनहुँ कुबेर ते ।
सब सुखी सब सुचरित्र सुन्दर नर युवा शिशु जरठ ते ॥
दो० उत्तर दिशि सरयू बहै, निर्मल जल गम्भीर ।
बांधे घाट मनोहर, स्वल्प पङ्क नहिं तीर ॥
दूर फराक रुचिर जो घाटा । जहँजलपिवहिंबाजिगजठाटा ॥
पनिघट परम मनोहर नाना । तहां न पुरुष करहिं अस्नाना ॥
राजघाट सबहीं विधि सुन्दर । मज्जहिं तहां बरण चारिउ नर ॥
तीर तीर देवन कर मन्दिर । चहुँदिशितेहिकेउपवनसुन्दर ॥
कहुँ कहुँ सरिता तीर निवासी । बसहिं ज्ञानरत मुनिसंन्यासी ॥
जहँ तहँ तुलसी वृन्द सुहाये । बहुप्रकार सब मुनिन लगाये ॥
पुर शोभा कछु बरणि न जाई । बाहर नगर परम रुचिराई ॥
देखत पुरी अखिल अघ भागा । वन उपवन वापिका तड़ागा ॥
छं०वापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहईं ।
सोपान सुन्दर नीर निरमल देखि सुर मुनि मोहईं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहु रङ्ग कञ्ज अनेक खग कूजहिं मधुप गुञ्जारहीं ।
आरामरम्य पिकादिखगरव मनहुँ पथिक हँकारहीं ॥
दो० रमानाथ जहँ राजा, सो पुर बरणि न जाइ ।
अणिमादिकसुखसम्पदा, रहीं अवधपुर छाइ ॥
जहँ तहँ नर रघुपतिगुण गावहिं । बैठि परस्पर इहै सिखावहिं ॥
भजहु प्रणत प्रतिपालक रामहिं । शोभाशील रूपगुण धामहिं ॥
जलजविलोचनश्यामलगातहिं । पलकनयनइव सेवकत्रातहिं ॥
धृतशर रुचिर चाप तूणीरहिं । सन्तकञ्जवन रविरणधीरहिं ॥
कालकराल व्याल खगराजहिं । नमतराम अकाममयताजहिं ॥
लोभमोहमृगयूथ किरातहि । मनसिजकरिहरिजनसुखदातहि ॥
संशय शोकनिविड़तमभानुहिं । दनुजगहनवनदहनकृशानुहिं ॥
जनकसुता समेत रघुवीरहि । कसनभजहु भञ्जनभवभीरहिं ॥
बहुबासनामशक हिमराशिहिं । सदाएकरसअजअविनाशिहिं ॥
मुनिरञ्जन भञ्जन महिभारहि । तुलसिदासके प्रभुहि उदारहि ॥
दो० इहिविधिनगरनारिनर, करहिं रामगुण गान ।
सानुकूल सन्तत रहत, सबपर कृपानिधान ॥
जबते राम प्रताप खगेशा । उदितभये अतिप्रबलदिनेशा ॥
पूरि प्रकाश रह्यो तिहुँलोका । बहुतन सुखबहुतनमनशोका ॥
जिनहिं शोकतेहिकहौंबखानी । प्रथम अविद्यानिशा सिरानी ॥
अघ उलूक जहँ तहां लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
विविध कर्म गुण काल सुभाऊ । ये चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा । इनकहँसुखनहिंकवनिहुँओरा ॥
धर्म तड़ाग ज्ञान विज्ञाना । ये पङ्कज विकसे विधिनाना ॥
सुख सन्तोष विराग विवेका । विगतशोक ये कोक अनेका ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० यह प्रतापरवि जासुउर, जब प्रभु करहिं प्रकाश ।
पाछिलबाढ़हिं प्रथम जे, कहे ते पावहिं नाश ॥
भ्रातन सहित राम इकबारा । संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥
सुन्दर उपवन देखन गयऊ । सब तरु कुसुमितपल्लवनयऊ ॥
जानि समय सनकादिक आये । तेज पुञ्ज गुण शील सुहाये ॥
ब्रह्मानन्द सदा लव लीना । देखत बालक बहु कालीना ॥
धरे देह जनु चारिउ वेदा । समदरशीमुनि विगतविभेदा ॥
आशावसन व्यसननहिंतिनहीं । रघुपतिचरितहोइ तहँ सुनहीं ॥
तहां रहे सनकादि भवानी । जहँ घटसम्भव मुनिवरज्ञानी ॥
रामकथा मुनि बहुविधि बरणी । ज्ञानयोगपावकजिमि अरणी ॥
दो० देखि राम मुनि आवत, हर्षि दण्डवत कीन्ह ।
स्वागत पूछि पीतपट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥
कीन्ह दण्डवत तीनिउँ भाई । सहितपवनसुतसुखअधिकाई ॥
मुनिरघुपतिछविअतुलविलोकी । भये मगनमन सकत न रोकी ॥
श्यामलगात सरोरुह लोचन । सुन्दरता मन्दर भवमोचन ॥
इकटक रहे निमेष न लावहिं । प्रभु करजोरे शीश नवावहिं ॥
तिनकी दशा देखि रघुवीरा । स्रवतनयनजलपुलकशरीरा ॥
कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे । परम मनोहर वचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा । तुम्हरे दरश जाहिं अघखीशा ॥
बड़े भाग्य पाइय सतसङ्गा । बिनहिं प्रयास होहिं भव भङ्गा ॥
दो० सन्त संग अपवर्गकर, कामी भवकर पन्थ ।
कहहिंसन्तकविकोविद, श्रुतिपुराण सदग्रन्थ ॥
सुनि प्रभुवचन हर्षि मुनिचारी । पुलकगातअस्तुतिअनुसारी ॥
जय भगवन्त अनन्त अनामय । अनघअनेक एककरुणामय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अनानिर्गुणजयजयगुणसागर । सुखनिधानतिहुँलोकउजागर ॥
जय इन्दिरारमण जय भूधर । अनुपमयश अनादिशोभाकर ॥
ज्ञाननिधान अमान मानप्रद । पावनसुयश पुराण वेद वद ॥
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भञ्जन । नाम अनेक अनाम निरञ्जन ॥
सर्व सर्वगत सर्व उरालय । बसहु सदा हमकहँ प्रतिपालय ॥
द्वन्द विपति भवफन्द विभञ्जन । हृद बसु राम काममदगञ्जन ॥
दो० परमानन्द कृपायतन, तुम परिपूरण काम ।
प्रेम भक्ति अनपावनी, देहु हमहिं श्रीराम ॥
देहु भक्ति रघुपति अनपावनि । त्रिविधताप भवदापनशावनि ॥
प्रणत काम सुरधेनु कल्पतरु । होइ प्रसन्न प्रभु दीजै यह वरु ॥
भववारिधि कुम्भज रघुनायक । सेवकसुलभ सकलसुखदायक ॥
मनसम्भव दारुण दुख दारय । दीनबन्धु समता विस्तारय ॥
आस त्रास ईर्षादि निवारक । विनयविवेक विरति विस्तारक ॥
भूपमौलिमणि मण्डन धरणी । देहु भक्ति संसृति सरितरणी ॥
मुनिमन मानस हंस निरन्तर । चरणकमल वन्दितअजशङ्कर ॥
रघुकुलकेतु सेतु श्रुतिरक्षक । काल कर्म स्वभाव गुणभक्षक ॥
तारण तरण हरण सब दूषण । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषण ॥
दो० बारबार अस्तुतिकरि, प्रेम सहित शिरनाय ।
ब्रह्मभवन सनकादिगे, अति अभीष्ट वरपाय ॥
सनकादिकविधि लोक सिधाये । भ्रातन रामचरण शिरनाये ॥
पूछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं । चितवहिं सब मारुतसुतपाहीं ॥
सुना चहहिं प्रभुमुख की बानी । जो सुनि होयसकलभ्रमहानी ॥
अन्तर्यामी प्रभु सब जाना । पूछत कहहु कहा हनुमाना ॥
जोरिपाणि तब कह हनुमन्ता । सुनिये दीनबन्धु भगवन्ता ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाथ भरत कछु पूछन चहहीं । प्रश्नकरतमन सकुचतअहहीं ॥
तुम जानहु कपि मोर सुभाऊ । भरतहिं मोहिं न कछू दुराऊ ॥
सुनि प्रभुवचन भरतगहिचरणा । सुनियनाथ प्रणतारतिहरणा ॥
दो० नाथ न मोहिंसन्देह कछु, सपनेहुँ शोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥
करौं कृपानिधि एक दिठाई । मैं सेवक तुम जनसुखदाई ॥
सन्तन की महिमा रघुराई । बहुविधि वेद पुराणन गाई ॥
श्रीमुख पुनि तुम कीन्ह बड़ाई । तिनपरप्रभुहिं प्रीतिअधिकाई ॥
सुनाचहौं प्रभु तिनकर लक्षण । कृपासिन्धु गुणज्ञानविचक्षण ॥
सन्त असन्त भेद बिलगाई । प्रणतपाल म्वहिंकाहियबुझाई ॥
सन्तन के लक्षण सुनु भ्राता । अगणितश्रुतिपुराण विख्याता ॥
सन्त असन्तनकी असकरणी । जिमि कुठार चन्दनआचरणी ॥
काटे परशु मलय सुनु भाई । निज गुण देइ सुगन्ध बसाई ॥
दो० ताते सुरशीशन चढ़त, जगवल्लभ श्रीखण्ड ।
अनल दाहिपीटत घनहिं, परशु वदन यह दण्ड ॥
विषय अलम्पट शीलगुणाकर । पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
सम अभूत रिपु विमद विरागी । लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी ॥
कोमलचित दीनन पर दाया । मनवच क्रम ममभक्त अमाया ॥
सबहिं मानप्रद आपु अमानी । भरत प्राणसम मम ते प्रानी ॥
विगतकाम मम नामपरायन । शान्तविरक्तिविदितमुदितायन ॥
शीतलता सरलता मयत्री । द्विजपद प्रेम धर्म जनयत्री ॥
यह सब लक्षण बसहिं जासु उर । जानेउ तात सन्त सन्तत फुर ॥
शमदमनियमनीतिनहिंडोलहिं । परुषवचन कबहूँ नहिं बोलहिं ॥
दो० निन्दाअस्तुति उभयसम, ममता मम पदकञ्ज ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ते सज्जन मम प्राणप्रिय, गुणमन्दिर सुखपुञ्ज ॥
सुनहु असन्तन केर सुभाऊ । भूलेहु संगति करिय न काऊ ॥
तिनकर संग सदा दुखदाई । जिमि कपिलहिं घालै हरहाई ॥
खलनहृदय अतिताप बिशेखी । जरहिं सदा परसम्पति देखी ॥
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई । हर्षहिं मनहुँ परी निधि पाई ॥
काम क्रोध मद लोभ परायन । निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
वैर अकारण सब काहूसों । जो करहित अनहित ताहूसों ॥
झूठै लेना झूठै देना । झूठै भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिं मधुरवचन जिमि मोरा । खाहिं महाअहि हृदयकठोरा ॥
दो० परद्रोही परदार रत, परधन पर अपवाद ।
ते नर पामर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥
लोभै ओढ़न लोभै डासन । शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन ॥
काहू की जो सुनहिं बड़ाई । श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
जब काहूकी देखहिं विपती । सुखी होहिं मानहुँ जगनृपती ॥
स्वारथ रत परिवार विरोधी । लम्पट काम लोभ अतिक्रोधी ॥
मात पिता गुरु विप्र न मानहिं । आपुगयेअरु घालहिंआनहिं ॥
करहिं मोह वश द्रोह परावा । सतसंगति हरिभक्ति न भावा ॥
अवगुणसिन्धु मन्दमति कामी । वेदविदूषक परधन स्वामी ॥
विप्र द्रोह परद्रोह विशेषी । दम्भ कपट जिय धरे सुवेषी ॥
दो० ऐसे अधम मनुज खल, कृतयुग त्रेता नाहिं ।
द्वापर कछुक बृन्द बहु, होइहैं कलियुगमाहिं ॥
परहित सरिस धर्म नहिं भाई । परपीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
निर्णय सकल पुराण वेदकर । कहेउँतात जानहिं कोविदनर ॥
नर शरीर धरि जो परपीरा । करहिं ते सहहिंमहाभवभीरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करहिं मोहवश नर अघ नाना । स्वारथरत परलोक नशाना ॥
कालरूप मैं तिनकर ताता । शुभ अरु अशुभकर्म फलदाता ॥
अस विचारि जो परम सयाने । भजहिंमोहिं संसृति दुखजाने ॥
त्यागहिं कर्म शुभाशुभदायक । भजैं मोहिं सुरनर मुनिनायक ॥
सन्त असन्तन के गुण भाखे । ते न परहिं भवजिनलखिराखे ॥

दो० सुनहु तात माया कृत, गुण अरु दोष अनेक ।
गुण यह उभय न देखिये, देखिय सो अविवेक ॥

श्रीमुख वचन सुनत सब भाई । हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई ॥
करहिं विनय अतिबारहिं बारा । हनूमान हिय हर्ष अपारा ॥
पुनि रघुपति निजमन्दिर गये । इहिविधिचरित करत नितनये ॥
बारबार नारद मुनि आवहिं । चरितपुनीत रामकर गावहिं ॥
नितनव चरित देखि मुनि जाहीं । ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
सुनिविरंचिअतिशयसुखमानहिं । पुनिपुनितातकरहुगुणगानहिं॥
सनकादिक नारदहिं सराहहिं । यद्यपिब्रह्मनिरतमुनि आहहिं ॥
सुनि गुणगान समाधि बिसारी । सादर सुनहिं परमअधिकारी ॥

दो० जीवनमुक्त ब्रह्म पर, चरित सुनहिं तजि ध्यान ।
जे हरिकथा न करहिंरति, तिनके हृदय पषान ॥

एक बार रघुनाथ बुलाये । गुरुद्विज पुरबासी सब आये ॥
बैठे गुरु द्विजवर मुनि सज्जन । बोले वचन भक्त भयभञ्जन ॥
सुनहु सकल पुरुजन मम बानी । कहौं न कछु ममता उरआनी ॥
नहिं अनीति नहिंकछुप्रभुताई । सुनौ करहु जो तुमहिं सुहाई ॥
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई । मम अनुशासन मानै जोई ॥
जो अनीति कछु भाखौं भाई । तौमोहिं बरजेहु भय बिसराई ॥
बड़े भाग्य मानुष तन पावा । सुर दुर्लभ सदग्रन्थन गावा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

साधन धाम मोक्षकर द्वारा । पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ॥
दो० सो परन्तु दुख पावई, शिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहिंकर्महिंईश्वरहिं, मिथ्या दोष लगाइ ॥
इहि तनुकर फल विषय न भाई । स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥
नर तनु पाइ विषय मन देहीं । पलटि सुधा ते शठ विष लेहीं ॥
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई । गुञ्जा गहै परसमणि खोई ॥
आकर चारि लाख चौरासी । योनिभ्रमतयहजिवअविनाशी ॥
फिरत सदा माया के प्रेरे । काल कर्म स्वभाव गुण घेरे ॥
कबहुँक करि करुणा नर देही । देत ईश बिनु हेतु सनेही ॥
नर तनु भव वारिधि कहँ बेरे । सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरे ॥
कर्णधार सद्गुरु दृढ़ नावा । दुर्लभसाजसुलभ करि पावा ॥
दो० जो न तरै भवसागरहि, नरसमाज अस पाइ ।
सोकृतनिन्दकमन्दमति, आतमहन गतिजाइ ॥
जो परलोक इहां सुख चहहू । सुनिममवचनहृदय दृढ़गहहू ॥
सुलभ सुखद यह मारग भाई । भक्ति मोरि पुराण श्रुतिगाई ॥
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका । साधनकठिन न मनमहँ टेका ॥
करत कष्ट बहु पावत कोई । भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोई ॥
भक्ति स्वतन्त्र सकल सुखखानी । बिनु सतसङ्ग न पावहिं प्रानी ॥
पुण्यपुञ्जबिनु मिलहिं न सन्ता । सतसंगति संसृतिकर अन्ता ॥
पुण्य एक जग में नहिं दूजा । मन क्रम वचन विप्रपदपूजा ॥
सानुकूल तिहिपर सब देवा । जो तजि कपट करै द्विजसेवा ॥
दो० औरौ एक गुप्त मत, सबहि कहौं करजोरि ।
शंकरभजन विना नर, भक्ति न पावै मोरि ॥
कहहु भक्ति पथ कवन प्रयासा । योग न मख जप तप उपवासा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सरल सुभाव न मन कुटिलाई । यथा लाभ सन्तोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आसा । करै तो कहहु कहा विश्वासा ॥
बहुत कहौं का कथा बढ़ाई । इहि आचरण वश्य मैं भाई ॥
बैर न विग्रह आश न त्रासा । सुखमय ताहि सदा सबआसा ॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी ॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा । तृणसम विषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
भक्ति पक्षता नहिं शठताई । दुष्टकर्म सब दूरि बिहाई ॥

दो० मम गुण ग्राम नाम रत, गत ममता मदमोह ।
ताकर सुख सोइ जाने, परमानँद सन्दोह ॥

सुनत सुधासम वचन राम के । सबन्हिगहेपद कृपाधाम के ॥
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे । कृपानिधान प्राण ते प्यारे ॥
तन धन धाम राम हितकारी । सब विधि तुम प्रणतारतिहारी ॥
असिसिख तुम बिनु देइ न कोऊ । मात पिता स्वारथरत ओऊ ॥
हेतुरहित सब विधि उपकारी । तुम तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथ मीत सकल जगमाहीं । सपनेहुँ कोउ परमारथ नाहीं ॥
सब के वचन प्रेमरस साने । सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने ॥
निज निज गृह गे आयसु पाई । बर्णत प्रभु की गिरा सुहाई ॥

दो० उमा अवधवासी नर, नारि कृतारथ रूप ।
ब्रह्म सच्चिदानन्द घन, रघुनायक जहँ भूप ॥

एकबार वशिष्ठ मुनि आये । जहाँ राम सुखधाम सुहाये ॥
अतिआदर रघुनायक कीन्हा । पदपखारिचरणोदक लीन्हा ॥
राम सुनहु मुनि कह करजोरी । कृपासिन्धु बिनती इकमोरी ॥
देखि देखि आचरण तुम्हारा । होत मोह मम हृदय अपारा ॥
महिमा अमित वेद नहिं जाना । मैं केहिभांति कहौं भगवाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उपरोहिती कर्म अति मन्दा । वेद पुराण स्मृति कर निन्दा ॥
जब न लेउँ तबहीं विधि मोहीं । कहा लाभ आगे सुत तोहीं ॥
परमातमा ब्रह्म नर रूपा । होइहैं रघुकुल भूषण भूपा ॥
दो० तब मैं हृदय विचार किय, योग यज्ञ जप दान ।
जेहिनितकरिय सो पाइये, धर्म न इहसम आन ॥
जप तप नियम योग व्रत धर्मा । श्रुतिसम्भव नानाविधि कर्मा ॥
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन । जहँलगिधर्मकहैं श्रुतिसज्जन ॥
आगम निगम पुराण अनेका । पढ़ै सुनै कर फल प्रभु एका ॥
तव पद पङ्कज प्रीति निरन्तर । सबसाधनकर फल यह सुन्दर ॥
छूटै मल कि मलहि के धोये । घृत कि पावकोउ वारिबिलोये ॥
प्रेम भक्ति जल बिनु रघुराई । अभ्यन्तर मल कबहुँ न जाई ॥
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पण्डित । सोइ गुणज्ञविज्ञानअखण्डित ॥
दक्ष सकल लक्षण युत सोई । जाके पद सरोज रति होई ॥
दो० नाथ एक वर मांगौं, मोहिं कृपाकरि देहु ।
जन्म जन्म प्रभुपदकमल, कबहुँ घटै जनि नेहु ॥
असकहि मुनिवशिष्ठ गृहआये । कृपासिन्धु के मनअति भाये ॥
हनूमान भरतादिक भ्राता । संग लिये सेवक सुखदाता ॥
पुनि कृपालु पुर बाहर गयऊ । गजरथ तुरग मँगावत भयऊ ॥
देखि कृपाकरि सकल सराहे । दियेउचितजिनजिन जो चाहे ॥
हरण सकल श्रम प्रभु श्रमपाई । गये जहां शीतल अमराई ॥
भरत दीन्ह निज वसन डसाई । बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुतसुत मारुत तब करई । पुलकि गात लोचनजल भरई ॥
हनूमान सम को बड़ भागी । नहिं कोउ रामचरण अनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । बारबार प्रभु निजमुख गाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० तेहि अवसर मुनिनारद, आये करतल बीन ।
गावन लागे रामगुण, कीरति सदा नवीन ॥
मामवलोकय पङ्कज लोचन । कृपाविलोकनिशोचविमोचन ॥
नीलतामरस श्याम कामअरि । हृदयकञ्ज मकरन्द मधुप हरि ॥
यातुधान बरूथ बल गञ्जन । मुनि सज्जन रञ्जन अघ भञ्जन ॥
भूसुर नवशासिबृन्द बलाहक । अशरणशरणदीनजनगाहक ॥
भुजबलबिपुल भारमहिखरिडत । खरदूषण बिराध बध परिडत ॥
रावणारि सुखरूप भूपवर । जय दशरथकुलकुमुदसुधाकर ॥
सुयशपुराण विदितनिगमागम । गावत सुर मुनि सन्तसमागम ॥
कारुणीक बाली मदखण्डन । सबविधिकुशलकोशलामण्डन ॥
कलिमलमथन नाम ममताहन । तुलसिदासप्रभुपाहिप्रणतजन ॥
दो० प्रेम सहित मुनि नारद, बरणि राम गुणग्राम ।
शोभासिन्धु हृदय धरि, गये जहां विधिधाम ॥
गिरिजा सुनहुविशद यह कथा । मैं सब कही मोरिमति यथा ॥
रामचरित शत कोटि अपारा । श्रुति शारदा न बरणैं पारा ॥
राम अनन्त अनन्त गुणानी । जन्मकर्म अगणित नामानी ॥
जलशीकर महिरजगणिजाहीं । रघुपति चरित न बरणिसिराहीं ॥
विमलकथा यहहरिपददायिनि । भक्तिहोइसुनिअतिअनपायिनि ॥
उमा कहेउँ सो कथा सुहाई । जो भुशुण्डिखगपतिहिसुनाई ॥
कछुक रामगुण कहेउँ बखानी । अब काकहौं सो कहहुभवानी ॥
सुनि शुभकथा उमा हरषानी । बोली अतिविनीत मृदुबानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउँ रामगुण भवभयहारी ॥
दो० तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह ।
जानेउँ राम प्रभाव प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाथतवाननशशि स्रवत, कथासुधा रघुवीर।
श्रवणपुटनिमनपानकिय, नहिंअघातमति धीर॥
रामचरति जे सुनत अघाहीं। रस विशेष जाना तिन नाहीं॥
जीवन मुक्त महामुनि जेऊ। हरिगुणसुनत अघात न तेऊ॥
भवसागर चह पार जो पावा। रामकथा ता कहँ दृढ़ नावा॥
विषयिनकहँपुनि हरिगुणग्रामा। श्रवणसुखदअरु मनविश्रामा॥
श्रवणवन्त अस को जगमाहीं। जाहि न रघुपति कथा सुहाहीं॥
ते जड़ जीव निजातम घाती। जिनहिं न रघुपतिकथा सुहाती॥
हरिचरित्र मानस तुम गावा। सुनि मैं नाथ परमसुख पावा॥
तुम जो कही यह कथा सुहाई। काकभुशुण्डि गरुड़ प्रति गाई॥
दो० विरत ज्ञान विज्ञानदृढ़, रामचरण अति नेह।
वायसतनु रघुपति भगति, मोहिं परम सन्देह॥
नर सहस्र महँ सुनहु पुरारी। कोउ इक होइ धर्म व्रतधारी॥
धर्मशील कोटिन महँ कोई। विषयविमुख विरागरत होई॥
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई। सम्यक ज्ञानसुकृत कोउ लहई॥
ज्ञानवन्त कोटिन महँ कोई। जीवनमुक्त सुकृत कोइ होई॥
तिनसहसनमहँ सब सुखखानी। दुर्लभ ब्रह्म निरत विज्ञानी॥
धर्मशील विरक्त अरु ज्ञानी। जीवनमुक्त ब्रह्म पर प्रानी॥
सबते सो दुर्लभ सुरराया। राम भक्तिरत गत मद माया॥
सो हरिभक्ति काक किमि पाई। विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई॥
दो० राम परायण ज्ञानरत, गुणागार मतिधीर।
नाथ कहहु केहि कारण, पायउ काक शरीर॥
यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा। कहहुकृपालु काक किमिपावा॥
तुम केहि भांति सुना मदनारी। कहहु मोहिं यह कौतुकभारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गरुड़ महाज्ञानी गुणरासी । हरिसेवकअतिनिकट निवासी ॥
सो केहि हेतु काक सन जाई । सुनी कथा मुनिनिकर बिहाई ॥
कहहु कवनि विधि भा संवादा । दोउ हरिभक्त काक उरगादा ॥
गौरिगिरा सुनि सरल सुहाई । बोले शिव सादर सुख पाई ॥
धन्य सती पावनि मति तोरी । रघुपतिचरण प्रीति नहिं थोरी ॥
सुनहु परम पुनीत इतिहासा । जो सुनि होइ सकलभ्रमनासा ॥
उपजहि रामचरण विश्वासा । भवनिधितरुनर बिनहिंप्रयासा ॥

दो० ऐसिय प्रश्न विहंगपति, कीन्ह काकसन जाइ ।
सो सब सादर कहतहौं, सुनहु उमा चितलाइ ॥

मैं जिमिकथा सुनी भयमोचनि । सोप्रसंगसुनुसुमुखिसुलोचनि ॥
प्रथम दक्ष गृह तव अवतारा । सती नाम तब रहा तुम्हारा ॥
दक्ष यज्ञ तव भा अपमाना । तुम अतिक्रोध तजा तहँप्राना ॥
मम अनुचरन कीन्ह मखभङ्गा । जानहु तुम सो सकलप्रसङ्गा ॥
तब अतिशोच भयउ मन मोरे । दुखितभयउँ वियोगप्रियतोरे ॥
सुन्दर गिरिवनसरित तड़ागा । कौतुक देखत फिरौं विभागा ॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी । नील शैल इक सुन्दर भूरी ॥
तासु कनकमय शिखर सुहाये । चारि चारु मोरे मन भाये ॥
तेहिपर इकइक विटपविशाला । वट पीपर पाकरी रसाला ॥
शैलोपरि सुन्दर सर सोहा । मणिसोपान देखि मन मोहा ॥

दो० शीतल अमलमधुर जल, जलज विपुल बहुरङ्ग ।
कूजत कल रव हंसगण, गुञ्जत नाना भृङ्ग ॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खगसोई । तासु नाश कल्पान्त न होई ॥
मायाकृत गुण दोष अनेका । मोह मनोज आदिअविवेका ॥
रहेउ व्यापि समस्त जगमाहीं ।तेहिगिरिनिकटकबहुँनहिंजाहीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तहँबसिहरिहिभजे जिमिकागा । सो सुनु उमासहित अनुरागा ॥
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । जाप योग पाकर तर करई ॥
आंब छांह करि मानस पूजा । तजिहरिभजनकाजनाहिंदूजा ॥
वट तर कह हरिकथा प्रसङ्गा । आवहिं सुनन अनेक विहङ्गा ॥
रामचरित विचित्र विधि नाना । प्रेम सहित करु सादर गाना ॥
सुनहिंसकलमति विमलमराला । बसहिंनिरन्तर जो जेहिकाला ॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनन्द विशेखा ॥

दो० तब कछु काल मरालतनु, धरितहँकीन्हनिवास ।
सादर सुनि रघुपतिचरित, पुनिआयउँ कैलास ॥

गिरिजाकहेउँ सो सबइतिहासा । मैं जेहिसमय गयउँ खगपासा ॥
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू । गयउ काकपहँ खगकुलकेतू ॥
जब रघुनाथ कीन्ह रणक्रीड़ा । समुझत चरितहोत मोहिंव्रीड़ा ॥
इन्द्रजीत कर आपु बँधावा । तब नारदमुनि गरुड़ पठावा ॥
बन्धन काटि गयउ उरगादा । उपजा हृदय प्रचण्ड विषादा ॥
प्रभु बन्धन समुझत बहुभांती । करत विचार उरगआराती ॥
व्यापक ब्रह्म विरज वागीशा । माया मोह पार परमीशा ॥
सो अवतार सुनेउँ जगमाहीं । देखा सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दो० भव बन्धन से छूटहीं, नर जपि जाकर नाम ।
खर्ब निशाचर बांधेऊ, नागफांस सोइ राम ॥

नानाभांति मनहिं समुझावा । प्रकट न ज्ञानहृदय भ्रमछावा ॥
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई । भयउ मोह वश तुम्हरी नाई ॥
व्याकुल गयउ देवऋषि पाहीं । कहेसिजोसंशयनिजमनमाहीं ॥
सुनिनारदहि लागि अतिदाया । सुनुखग प्रबल रामकी माया ॥
जो ज्ञानिनकर चित अपहरई । बरिआई विमोह वश करई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जेहि बहु बार नचावा मोहीं । सो व्यापेउ विहंगपति तोहीं ॥
महामोह उपजा मन तोरे । मिटहि न वेगि कहे खगमोरे ॥
चतुरानन पहँ जाहु खगेशा । सोइ करहु जो देहिं उपदेशा ॥
दो० अस कहि चले देवऋषि, करत रामगुण गान ।
हरिमाया बल बरणत, पुनिपुनि परम सुजान ॥
तब खगपति विरंचि पहँ गयऊ । निजसन्देह सुनावत भयऊ ॥
सुनि विरंचि रामहिं शिरनावा । समुझि प्रताप प्रेम उरछावा ॥
मनमहँ करहिं विचार विधाता । मायावश कविकोविद ज्ञाता ॥
हरिमाया कर अमित प्रभावा । विपुलबार जो मोहिं नचावा ॥
अगजगमय जग मम उपजाया । नहिं आश्चर्य मोह खगराया ॥
पुनि बोले विधि गिरा सुहाई । जानु महेश राम प्रभुताई ॥
वैनतेय शंकर पहँ जाहू । तात अनत पूछहु जनिकाहू ॥
तहां होइ तव संशय हानी । चलाविहगपतिसुनिविधिबानी ॥
दो० परमातुर विहंगपति, तब आयउ मम पास ।
जात रहेउँ कुबेर गृह, उमा रहिउ कैलास ॥
तेइ मम पद सादर शिरनावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥
सुनि ताकरि पुनीत मृदुबानी । प्रेमसहित मैं कहेउँ भवानी ॥
मिलेउ गरुड़ मारगमहँ मोहीं । कवनि भांति समुझावों तोहीं ॥
जब कछुकाल करिय सतसङ्गा । तब यह होइ मोहभ्रमभङ्गा ॥
सुनिय तहां हरिकथा सुहाई । नानाभांति मुनिन जो गाई ॥
जेहिमहँ आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य रामभगवाना ॥
नित हरिकथा होइ जहँ भाई । पठवौं तोहिं सुनहु तहँ जाई ॥
जाइहि सुनत सकल सन्देहा । होइहि राम चरण दृढ़ नेहा ॥
दो० विनु सतसंग न हरिकथा, तेहिबिनुमोह न भाग ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गरुड़जीको कागभुशुण्डिके आश्रमपर जाय कागभुशुण्डिजीसे रामचरित्र श्रवण करि निज भ्रमनिवृत्त करना ॥

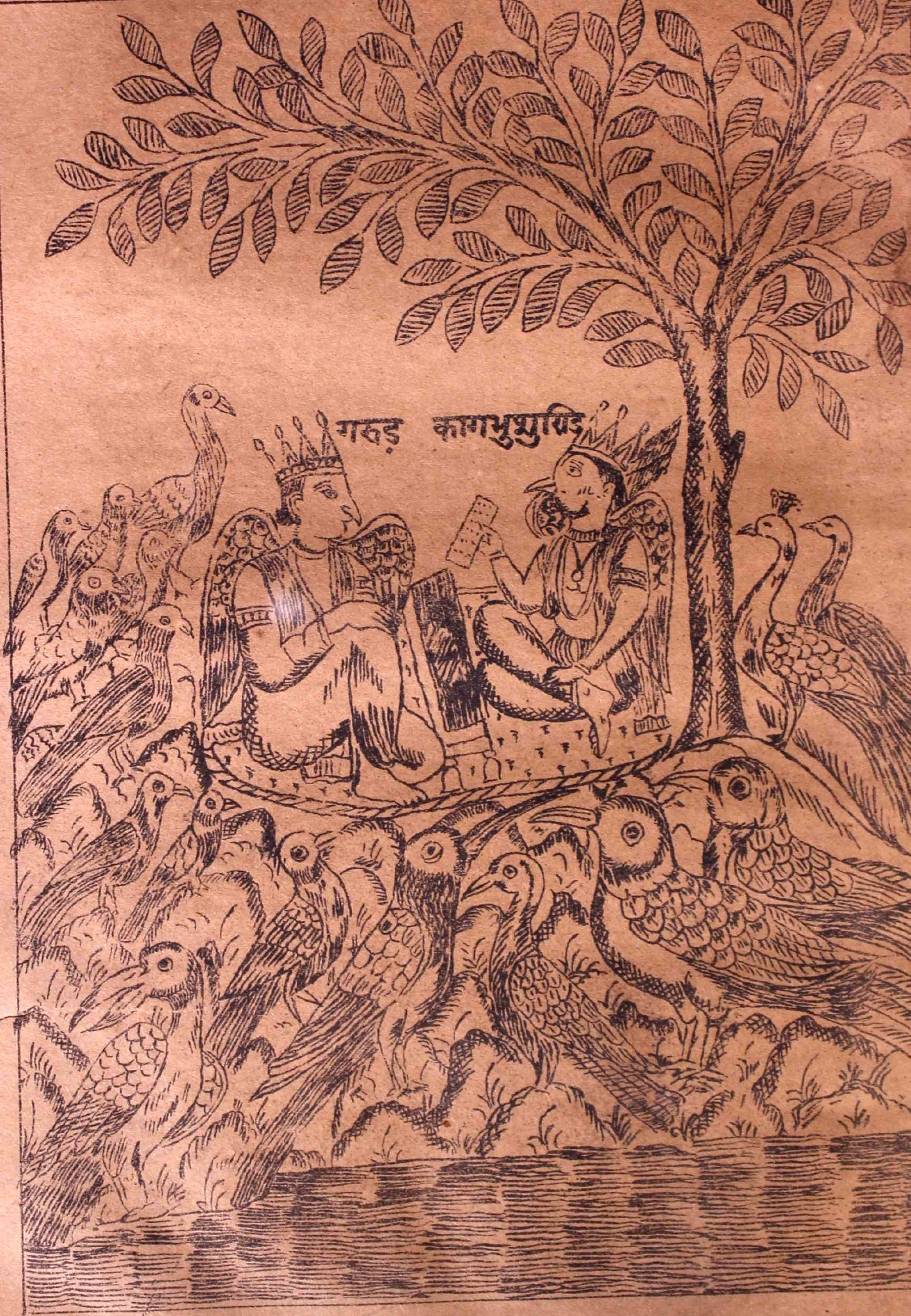

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोह गये बिनु राम पद, होइ न दृढ़ अनुराग ॥
मिलहिं न रघुपतिबिनुअनुरागा । किये योग जप ज्ञान विरागा ॥
उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला । तहँ रह काकभुशुण्डि सुशीला ॥
राम भक्ति पथ परम प्रवीना । ज्ञानी गुणगृह बहुकालीना ॥
रामकथा सोइ कहै निरन्तर । सादर सुनहिं विविध विहङ्गवर ॥
जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूरी । होइहि मोहजनित दुख दूरी ॥
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई । चले हर्षि ममपद शिरनाई ॥
ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपा मर्म सब पावा ॥
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ॥
कछु तेहिते पुनि मैं नहिं राखा । खग जानै खगही की भाखा ॥
प्रभु माया बलवन्त भवानी । जाहि न मोह कवनअसज्ञानी ॥

दो० ज्ञानी भक्त शिरोमणि, त्रिभुवनपतिकरजान ।
ताहि मोह माया प्रबल, पामर करहिं गुमान ॥
शिव विरञ्चि कहँ मोहई, को है बपुरा आन ।
असजियजानिभजहिंमुनि, मायापति भगवान ॥

गयउ गरुड़ जहँ बसै भुशुण्डी । मतिअकुण्ठहरिभक्तिअखण्डी ॥
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ । मायामोह शोक भ्रम गयऊ ॥
करि तड़ाग मज्जन जलपाना । वटतर गयउ हृदय हर्षाना ॥
वृन्द वृन्द विहंग तहँ आयें । सुनै राम के चरित सुहाये ॥
कथा अरम्भ करै सो चाहा । ताही समय गयउ खगनाहा ॥
आवत देखि सकल खगराजा । हर्षेउ वायस सहित समाजा ॥
अति आदर खगपतिकर कीन्हा । स्वागतपूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा । मधुरवचन बोले तब कागा ॥

दो० नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दर्शन खगराज ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आयसुहोइ सो करों अब, प्रभु आयहु केहिकाज ॥
सदा कृतारथ रूप तुम, कह मृदुवचन खगेश ।
जाकी अस्तुति सादर, निजमुख कीन्ह महेश ॥
सुनहु तात जेहि कारण आयउँ । सो सब भयउ दर्श तव पायउँ ॥
देखि परम पावन तव आश्रम । गयउ मोह संशय नानाभ्रम ॥
अब श्रीरामकथा अतिपावनि । सदासुखद दुखपुञ्ज नशावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोहीं । बार बार बिनवों प्रभु तोहीं ॥
सुनत गरुड़की गिरा विनीता । सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भयउ तात मन परम उछाहा । कहै लाग रघुपति गुणगाहा ॥
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी । रामचरित सब कहेसि बखानी ॥
पुनि नारदकर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावण अवतारा ॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । पुनिशिशुचरितकहेसिमनलाई ॥
दो० बालचरितकहिविविधविधि, मनमहँ परमउछाह ।
ऋषिआगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुवीर विवाह ॥
बहुरि राम अभिषेक प्रसङ्गा । पुनि नृपमरण राजरस भङ्गा ॥
पुरबासिन कर विरह विषादा । कहेसि राम लक्ष्मण संवादा ॥
विपिन गवन केवट अनुरागा । सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥
बालमीकि प्रभुमिलन बखाना । चित्रकूट जिमि बस भगवाना ॥
सचिवागमन नगर नृपमरणा । भरतागमन प्रेम अतिबरणा ॥
करि नृपक्रिया संग पुरबासी । भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी ॥
पुनि रघुपति बहुविधि समुझाये । लै पादुका अवध फिरि आये ॥
भरतरहनि सुरपतिसुत करणी । प्रभु अरु अत्रिभेंट पुनि बरणी ॥
दो० कहि बिराधबधजाहिविधि, देह तजी शरभङ्ग ।
बरणि सुतीक्षण प्रेम पुनि, प्रभु अगस्त्य सतसङ्ग ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहि दण्डक वन पावनताई । गृद्ध्र मइत्री पुनि तेइँ गाई ॥
पुनि प्रभु पञ्चवटीकृत बासा । भञ्जेउ सकलमुनिनकर त्रासा ॥
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा । शूर्पणखा जिमि कीन्हकुरूपा ॥
खरदूषण बध बहुरि बखाना । जिमि सबमर्म दशाननजाना ॥
दशकन्धर मारीच बतकही । जेहिविधि भई सकल तेइँकही ॥
पुनि माया सीताकर हरणा । श्रीरघुवीर विरह कछु बरणा ॥
पुनिप्रभु गृद्ध्रक्रिया जिमिकीन्हीं । बधकबन्ध शबरिहिंगतिदीन्हीं ॥
बहुरि विरह बरणत रघुवीरा । जेहिविधि गयउ सरोवर तीरा ॥

दो० प्रभु नारद संवाद कहि, मारुत मिलन प्रसङ्ग ।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्राणकर भङ्ग ॥
कपिहितिलककरि प्रभुकृत, शैल प्रवर्षण बास ।
बरणत बर्षा शरद ऋतु, राम रोष कपित्रास ॥

जेहिविधिकपिपति कीशपठाये । सीताखोज सकलदिशि धाये ॥
बिवर प्रवेश कीन्ह जेहि भांती । कपिन बहोरि मिला सम्पाती ॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा । लांघत भयउ पयोधि अपारा ॥
लङ्का कपि प्रवेश जिमि कीन्हा । पुनिसीतहिंधीरजजिमिदीन्हा ॥
वन उजारि रावणहिं प्रबोधी । पुर दहि लांघेउ बहुरि पयोधी ॥
आये कपि सब जहँ रघुराई । वैदेही की कुशल सुनाई ॥
सेन समेत यथा रघुवीरा । उतरे जाइ वारिनिधि तीरा ॥
मिला विभीषण जेहिविधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥

दो० सेतुबांधि कपिसेन जिमि, उतरे सागर पार ।
गयो बसीठी वीरवर, जेहिविधिबालिकुमार ॥
निशिचर कीश लड़ाई, बरणेसि विविधप्रकार ।
कुम्भकर्ण घननाद कर, बल पौरुष संहार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निशिचरनिकरमरणविधिनाना । रघुपति रावण समर बखाना ॥
रावण बध मन्दोदरि शोका । राज्य विभीषण देव अशोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्ह कीन्हअस्तुतिकरजोरी ॥
पुनि पुष्पक चढ़ि सीय समेता । अवध चले प्रभु कृपानिकेता ॥
जेहिविधि राम नगर नियराये । वायस विशदचरित सब गाये ॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर वर्णन नृप नीति अनेका ॥
कथा समस्त भुशुण्डि बखानी । जो मैं तुमसन कहा भवानी ॥
सुनि शुभ राम कथा खगनाहा । विगतमोह मन परमउछाहा ॥

सो० गयउ मोर सन्देह, सुनेउँ सकल रघुपतिचरित ।
भयउ रामपद नेह, तव प्रसाद वायसतिलक ॥
मोहिंभयउअति मोह, प्रभुबन्धन रणमहँ निरखि ।
चिदानन्द सन्दोह, राम विकल कारण कवन ॥

देखि चरित अति नर अनुहारी । भयउ हृदय मम संशयभारी ॥
सो भ्रम अब मैं हितकरि माना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥
जो अतिआतप व्याकुल होई । तरुछाया सुख जानै सोई ॥
जो नहिं होत मोह अतिमोहीं । मिलतेउँतातकवनविधितोहीं ॥
सुनतेउँ किमि हरिकथा सुहाई । अतिविचित्र सबविधितुमगाई ॥
निगमागम पुराण मत एहा । कहहिंसिद्ध मुनि नहिं सन्देहा ॥
सन्त विशुद्ध मिलहिं पुनि तेही । चितवहिं राम कृपाकरि जेही ॥
राम कृपा तव दर्शन भयऊ । तव प्रसाद मम संशय गयऊ ॥

दो० सुनि विहंगपति वाणी, सहित विनय अनुराग ।
पुलकगात लोचन सजल, मन हर्ष अति काग ॥
श्रोता सुमति सुशीलअति, कथा रसिक हरिदास ।
पाइ उमा यह गोप्यमत, सज्जन करहिं प्रकास ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बोलेउ कागभुशुण्डि बहोरी । नभगनाथपर प्रीति न थोरी ॥
सब विधि नाथ पूज्य तुम मेरे । कृपापात्र रघुनायक केरे ॥
तुमहिं न संशय मोह न माया । मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया ॥
पठै मोह मिसु खगपति तोहीं । रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं ॥
तुम निज मोह कहा खगसाईं । सो नहिं कछु आश्चर्य गुसाईं ॥
नारद शिव विरञ्चि सनकादी । जो मुनिनायक आतम वादी ॥
मोह न अन्ध कीन्ह केहिकेही । को जग काम नचाव न जेही ॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा । केहिके हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥

दो० ज्ञानी तापस शूर कवि, कोविद गुण आगार ।
केहिकै लोभ बिडम्बना, कीन्ह न यह संसार ॥
श्रीमद वक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगनयनी के नयनशर, को अस लागु न जाहि ॥

गुण कृत सन्निपात नहिं केही । को न मानमद व्यापेउ जेही ॥
यौवनज्वर केहि नहिं बलकावा । ममताकेहिकरयश न नशावा ॥
मत्सर काहि कलङ्क न लावा । काहि न शोकसमीर डोलावा ॥
चिन्तासांपिनि काहि न खाया । को जग जाहि न व्यापी माया ॥
कीट मनोरथ दारु शरीरा । जेहि न लागघुनको असधीरा ॥
सुत वित नारि एषणा तीनी । केहिकीमतिइन्हकृतनमलीनी ॥
यह सब मायाकृत परिवारा । प्रबल अमित को बरणै पारा ॥
शिव चतुरानन देखि डराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो० व्यापि रह्यो संसार महँ, माया कटक प्रचण्ड ।
सेनापति कामादि भट, दम्भ कपट पाखण्ड ॥
सो दासी रघुवीर की, समुझै मिथ्या सोपि ।
छूटै न रामकृपा बिनु, नाथ कहौं प्रण रोपि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सो माया सब जगहि नचावा । जासुचरितलखिकाहु न पावा ॥
सो प्रभु भ्रूविलास खगराजा । नाच नटीइव सहित समाजा ॥
व्यापक ब्रह्म अखण्ड अनन्ता । अखिल अमोघ एक भगवन्ता ॥
सोइ सच्चिदानन्द घनश्यामा । अज विज्ञानरूप गुणधामा ॥
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता । समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा । नित्य निरञ्जन सुख संदोहा ॥
प्रकृतिपार प्रभु सब उरबासी । ब्रह्म निरीह विरज अविनासी ॥
इहां मोहकर कारण नाहीं । रविसन्मुख तम कबहुँ न जाहीं ॥

दो० भक्त हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप ।
किये चरित पावनपरम, प्राकृत नर अनुरूप ॥
यथा अनेक वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ ।
जोइ जोइ भाव दिखावै, आपु न होइ न सोइ ॥

अस रघुकुल लीला उरगारी । दनुज विमोहन जनसुखकारी ॥
जे मतिमलिन विषयवशकामी । प्रभुपर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
नयन दोष जा कहँ जब होई । पीतवरण शशिकहँ कह सोई ॥
जब जेहि दिग्भ्रम होइ खगेशा । सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा ॥
नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचल मोहवश आपुहि लेखा ॥
बालकभ्रमहिंन भ्रमहिं गृहादी । कहहिं परस्पर मिथ्यावादी ॥
हरिविषयिक अस मोहविहंगा । सपनेहुँ नहिं अज्ञान प्रसंगा ॥
माया वश मतिमन्द अभागी । हृदयजमनिका बहुविधिलागी ॥
ते शठ हठ वश संशय करहीं । निज अज्ञान रामपर धरहीं ॥

दो० काम क्रोध मद लोभ रत, गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि, मूढ़परे तम कूप ॥
निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुण न जानै कोइ ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुगम अगम नानाचरित, सुनि मुनिमन भ्रम होइ ॥
सुनु खगपति रघुपति प्रभुताई। कहौं यथामति कथा सुहाई ॥
ज्यहिविधि मोहभयउ प्रभु मोहीं। सो सब चरित सुनावों तोहीं ॥
रामकृपा भाजन तुम ताता। हरिगुण प्रीति मोहिंसुखदाता ॥
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावों। परम रहस्य मनोहर गावों ॥
सुनहु रामकर सहज सुभाऊ। जन अभिमान न राखैं काऊ ॥
संसृति मूल शूलप्रद नाना। सकलशोकदायक अभिमाना ॥
ताते करहिं कृपानिधि दूरी। सेवक पर ममता अतिभूरी ॥
जिमिशिशुतनव्रण होहि गुसाईं। मातु चिराव कठिनकी नाईं ॥
दो० यदपि प्रथम दुख पावै, रोवै बाल अधीर।
व्याधि नाश हित जननी, गनै न सो शिशुपीर ॥
तिमिरघुपतिनिजदासकर, हरहिं मान हित लागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं, कस न भजहु भ्रमत्यागि ॥
राम कृपा आपनि जड़ताई। कहौं खगेश सुनहु मनलाई ॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीं। भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥
तब तब अवधपुरी मैं जाऊं। शिशुलीला विलोकि हर्षाऊं ॥
जन्म महोत्सव देखौं जाई। वर्ष पांच तहँ रहौं लुभाई ॥
इष्टदेव मम बालक रामा। शोभा वपुष कोटि शतकामा ॥
निज प्रभुवदन निहारि निहारी। लोचन सुफल करौं उरगारी ॥
लघुवायस वपु धरि हरि सङ्गा। देखौं बाल चरित बहुरङ्गा ॥
दो० लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उड़ाउँ।
जूठन परै अजिर महँ, सो उठाय पुनि खाउँ ॥
एकबार अतिशय प्रबल, चरित कीन्ह रघुबीर।
सुमिरत प्रभु लीला सोई, पुलकित भयउ शरीर ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहैं भुशुण्डि सुनहु खगनायक। रामचरित सेवक सुखदायक॥
नृप मन्दिर सुन्दर सबभांती। खचितकनकमणिनानाजाती॥
बरणि न जाय रुचिर अँगनाई। जहँ खेलहिं नित चारो भाई॥
बाल विनोद करत रघुराई। बिचरतअजिरजननिसुखदाई॥
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा। अङ्गअङ्ग प्रति छवि बहुकामा॥
नवराजीव अरुण मृदु चरणा। पदपङ्कजनखशशिद्युतिहरणा॥
ललित अङ्क कुलिशादिक चारी। नूपुर चारु मधुर रवकारी॥
चारुपुरट मणि रचित बनाई। कटिकिंकिणिकलमुखरसुहाई॥
दो० रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गम्भीर।
उरआयत भ्राजत विविध, बाल विभूषण चीर॥
अरुण पाणि नख करज मनोहर। बाहु विशाल विभूषण सोहर॥
कन्ध बाल केहरि दरग्रीवां। चारुचिबुकआननछविसीवां॥
कलबल वचन अधर अरुणारे। दुइ दुइ दशन विशद बरबारे॥
ललित कपोल मनोहर नासा। सकलसुखदशशिकरसमहासा॥
नीलकञ्ज लोचन भयमोचन। भ्राजतभाल तिलकगोरोचन॥
विकटभ्रुकुटिसम श्रवण सुहाये। कुञ्चित कच मेचकछविछाये॥
पीत झीन झींगुलि तनसोही। किलकनिचितवनिभावतमोही॥
रूपराशि नृप अजिर विहारी। नाचहिंनिजप्रतिबिम्ब निहारी॥
मोसनकरहिं विविधविधिक्रीड़ा। बरणत चरित होत मनव्रीड़ा॥
किलकतमोहिं धरन जबधावहिं। चलौंभाजि तब पूप देखावहिं॥
दो० आवत निकट हँसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहनपद, फिरिफिरि चितैपराहिं॥
प्राकृत शिशु इव लीला, देखि भयो मोहिं मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानन्द सन्दोह॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इतना मन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया न दुखद मोहिंकाहीं । आन जीव इव संसृति नाहीं ॥
नाथ इहां कछु कारण आना । सुनहु सो सावधान हरियाना ॥
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर । मायावश्य जीव सचराचर ॥
जो सबके रह ज्ञान एक रस । ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥
मायावश्य जीव अभिमानी । ईशवश्य माया गुणखानी ॥
परवश जीव स्ववश भगवन्ता । जीव अनेक एक श्रीकन्ता ॥
दुबिधा भेद अपी कृत माया । बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥

दो० रामचन्द्र के भजन बिनु, जो चह पद निर्वाण ।
ज्ञानवन्त अपि सोपि नर, पशु बिनु पुच्छ विषाण ॥
राकापति षोड़श उगहिं, तारागण समुदाय ।
सकल गिरिन दवलाइये, रवि बिनु राति न जाय ॥

ऐसे बिनु हरि भजन खगेशा । मिटै न जीवनकेर कलेशा ॥
हरि सेवकहिं न व्याप अविद्या । प्रभुप्रेरित तेहि व्यापै विद्या ॥
ताते नाश न होइ दास कर । भेद भक्ति बाढ़ै विहंगवर ॥
भ्रममय चकित राम मोहिं देखा । विहँसे सो सुनु चरित विशेखा ॥
तेहि कौतुक कर मर्म न काहू । जाना अनुज न मात पिताहू ॥
जानु पाणि धाये मोहिं धरना । श्यामलगात अरुणमृदुचरना ॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी । राम गहन कहँ भुजा पसारी ॥
जिमिजिमि दूरि उड़ाउँ अकासा । तिमितिमि भुजदेखौं निजपासा

दो० ब्रह्मलोक लौं गयउँ मैं, चितवत पाछे उड़ात ।
युग अंगुलकर बीच रह, रामभुजहि मोहिं तात ॥
सप्तावरण सुभेद करि, जहँलागिरहिगतिमोरि ।
गयों तहां प्रभुभुजनिरखि, व्याकुल भयों बहोरि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मूँदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ । पुनिचितवत कौशलपुरगयऊँ ॥
मोहिं विलोकि राम मुसकाहीं । विहँसत तुरत गयउँ मुखमाहीं ॥
उदर मांझ सुन अण्डजराया । देखेउँ बहु ब्रह्माण्ड निकाया ॥
अतिविचित्र तहँ लोक अनेका । रचना अमित एकते एका ॥
कोटिन चतुरानन गौरीशा । अगणित उडुगणरविरजनीशा ॥
अगणित लोकपाल यमकाला । अगणित भूधर भूमि विशाला ॥
सागर सरिता विपिन अपारा । नाना भांति सृष्टि विस्तारा ॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर । चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दो० जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनमहँ न समाइ ।
अस अद्भुत तहँ देखेउँ, बरणिकवनविधिजाइ ॥
एक एक ब्रह्माण्ड महँ, रहेउँ वर्ष शत एक ।
यहि विधि मैं देखत फिरेउँ, अण्डकटाह अनेक ॥

लोक लोक प्रति भिन्न विधाता । भिन्नविष्णुशिवमनुदिशित्राता ॥
नर गन्धर्व भूत वैताला । किन्नरनिशिचरपशुखगव्याला ॥
देव दनुज गण नाना जाती । सकल जीवतहँ आनहिंभांती ॥
महि सरि सागर सर गिरि नाना । सब प्रपञ्च तहँ आनहिं आना ॥
अण्डकोश प्रति प्रति निज रूपा । देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रति भुवन निहारी । सरयू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दशरथ कौशल्यादिक माता । विविधरूप भरतादिक भ्राता ॥
प्रति ब्रह्माण्ड राम अवतारा । देखेउँ बाल विनोद अपारा ॥

दो० भिन्न भिन्न सब देखेउँ, अतिविचित्र हरियान ।
अगणित देखतफिरेउँ मैं, राम न देखा आन ॥
सो शिशुपन सोइ शोभा, सोइ कृपालु रघुवीर ।
भुवन भुवनदेखत फिरेउँ, प्रेरित मोह समीर ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका । बीते मनहुँ कल्प शत एका ॥
फिरतफिरतनिजआश्रमआयउँ । तहँपुनिरहिकछुकालगँवायउँ ॥
निजप्रभुजन्म अवधसुनिपायउँ । निर्भर प्रेम हर्षि उठि धायउँ ॥
देखेउँ जन्म महोत्सव जाई । जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई ॥
राम उदर देखेउँ जग नाना । देखत बनै न जात बखाना ॥
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना । मायापति कृपालु भगवाना ॥
करौं विचार बहोरि बहोरी । मोहकलित व्यापित मतिभोरी ॥
उभय घरी महँ मैं सब देखा । भयउँ भ्रमितमन मोह विशेखा ॥

दो० देखि कृपालु विकलमोहिं, विहँसे तब रघुवीर ।
विहँसतही मुख बाहर, आयउँ सुन मतिधीर ॥
सोइ लरिकाईं मोहिंसन, लगे करन पुनि राम ।
कोटि भांति समुझायों, मन न लहै बिश्राम ॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई । समुझत देह दशा बिसराई ॥
धरणि परेउँ मुख आव न बाता । त्राहि त्राहि आरत जनत्राता ॥
परमाकुल प्रभु मोहिं विलोकी । निज माया प्रभुता तब रोंकी ॥
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ । दीनदयालु दुसह दुख हरेऊ ॥
कीन्हराम मोहिं विगतविमोहा । सेवक सुखद कृपा सन्दोहा ॥
प्रभुता प्रथम विचारि विचारी । मनमहँ होइ हर्ष अति भारी ॥
भक्त बछलता प्रभु कै देखी । उपजा मम उर हर्ष विशेखी ॥
सजलनयन पुलकित करजोरी । कीन्ही बहुविधि विनय बहोरी ॥

दो० सुनि सप्रेम मम वाणी, देखि दीन निज दास ।
वचन सुखद गम्भीर मृदु, बोले रमा निवास ॥
काकभुशुण्डी मांगु वर, अतिप्रसन्न मोहिं जानि ।
अणिमादिकसिधिअपरनिधि, मोक्ष सकल सुखखानि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्ञान विवेक विरति विज्ञाना । मुनिदुर्लभगति जो जगजाना ॥
आजु देउँ सब संशय नाहीं । मांगु जो तोहिं भावमनमाहीं ॥
सुनि प्रभुवचन बहुतअनुरागेउँ । मन अनुमान करन तब लागेउँ ॥
प्रभु कह देन सकल सुख सही । भक्ति आपनी देन न कही ॥
भक्तिहीन गुण सुख सब ऐसे । लवणविना बहु व्यञ्जन जैसे ॥
भक्तिहीन सुख कवने काजा । अस विचार बोलेउँ खगराजा ॥
जो प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू । मोपर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मन भावत वर मांगौं स्वामी । तुम उदार उर अन्तर्यामी ॥

दो० अविरलभक्ति विशुद्ध तव, श्रुति पुराण जो गाव ।
जेहि खोजतयोगीशमुनि, प्रभु प्रताप कोउ पाव ॥
भक्त कल्पतरु प्रणतहित, कृपासिन्धु सुखधाम ।
सोइनिज भक्ति मोहिं प्रभु, देहु दया करि राम ॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले वचन परम सुखदायक ॥
सुनु बायस तैं परम सयाना । काहे न मांगसि अस वरदाना ॥
सब सुखखानि भक्ति तैं मांगी । नहिंकोउतोहिंसमानबड़भागी ॥
जो मुनि कोटि यत्न नहिं लहहीं । कै जप योगअनल तन दहहीं ॥
रीझेउँ तोरि देखि चतुराई । मांगेउ भक्ति मोहिं अतिभाई ॥
सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे । सब शुभगुण बसिहैं उर तोरे ॥
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा । जो सब चरित रहस्य विभागा ॥
जानब तैं सबही कर भेदा । मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥

दो० माया सम्भव सकलभ्रम, अब नहिं व्यापिहि तोहिं ।
जानेसि ब्रह्म अनादि अज, अगुण गुणाकर मोहिं ॥
मोहिं भक्त प्रिय सन्तत, अस विचारि सुनु काग ।
काय वचन मन मम चरण, करहु अचल अनुराग ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अब सुनु परम बिमल मम बानी । सत्यसुगम निगमादि बखानी ॥
निज सिद्धान्त सुनावों तोहीं । सुनुमनधरिसबतजि भजुमोहीं ॥
मम माया संभव संसारा । जीव चराचर विविध प्रकारा ॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाये । सबते अधिक मनुजमोहिंभाये ॥
तेहिमहँ द्विज द्विजमहँश्रुतिधारी । तिनमहँनिगम धर्म अनुसारी ॥
तिन्हमहँ प्रिय विरक्तमुनि ज्ञानी । ज्ञानिहुँते अतिप्रिय बिज्ञानी ॥
तेहितेपुनिमोहिं प्रिय निजदासा । जेहि गतिमोरिनदूसरि आसा ॥
पुनिपुनि सत्य कहौं तोहिंपाहीं । मोहिंसेवकसम प्रियकोउनाहीं ॥
भक्तिहीन विरंचि किन होई । सब जीवन महँ अप्रिय सोई ॥
भक्तिवन्त अति नीचौ प्राणी । मोहिं परम प्रिय सुनु मम बाणी ॥

दो० श्रुति सुशील सेवक सुमति, कहु प्रिय काहि न लाग ।
श्रुति पुराण कह नीति अस, सावधान सुनु काग ॥

एक पिताके विपुल कुमारा । होइँ पृथकगुण शील अचारा ॥
कोउ पण्डित कोउ तापस ज्ञाता । कोउ धनवन्त शूर कोउ दाता ॥
कोउ सर्बज्ञ धर्मरत कोई । सबपर पितहिं प्रीति सम होई ॥
कोउ पितुभक्त वचन मन कर्मा । सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा ॥
सो प्रिय सुत पितु प्राणसमाना । यद्यपि सो सब भांति अयाना ॥
इहि विधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिल विश्व यह ममउपजाया । सबपर मोरि बराबरि दाया ॥
तिनमहँ जो परिहरिसब माया । भजहिमोहिंमनवच अरुकाया ॥

दो० पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर कोइ ।
सर्वभाव भजु कपट तजि, मोहिं परम प्रिय सोइ ॥

सो० सत्य कहौं खग तोहिं, शुचि सेवक ममप्राणप्रिय ।
अस विचारि भजुमोहिं, परिहरि आशभरोस सब ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कबहुँकाल नाहिं ब्यापै तोहीं । सुमिरेसु भजेसु निरन्तर मोहीं ॥
प्रभुवचनामृत सुनि न अघाऊं । तन पुलकित मन अतिहर्षाऊं ॥
सो सुख जानैं मन अरु काना । नहिं रसनाप्रति जाइ बखाना ॥
प्रभु शोभा सुख जानत नयना । कहिकिमिसकैंतिन्हैंनहिंबयना ॥
बहुविधि राम मोहिं सिख देई । लगे करन शिशुकौतुक तेई ॥
सजलनयनकछुमुख करिरूखा । चितै मातुतन लागी भूखा ॥
देखि मातु आतुर उठिधाई । कहि मृदु वचन लिये उरलाई ॥
गोद राखि कराव पय पाना । रघुपतिचरितललितकरि गाना ॥

सो० जेहि सुखलागि पुरारि, अशिव वेषकृत शिवसुखद ।
अवधपुरी नर नारि, तेहि सुखमहँ संतत मगन ॥
सोई सुख लवलेश, जिन बारक सपनेहुँ लहेउ ।
ते नहिं गनहिं खगेश, ब्रह्मसुखहिं सज्जन सुमति ॥

मैं पुनि रह्यों अवध कछु काला । देख्यों बाल बिनोद रसाला ॥
राम प्रसाद भक्ति वर पायउँ । प्रभुपदवन्दि निजाश्रमआयउँ ॥
तबते मोहिं न व्यापी माया । जबते रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा । हरिमाया जिमि मोहिं नचावा ॥
निज अनुभव अबकहौंखगेशा । बिनुहरिभजन न जाहिंकलेशा ॥
रामकृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥
जाने बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥
प्रीति विना नहिं भक्ति दृढ़ाई । जिमि खगेश जलकीचिकनाई ॥

सो० बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग बिनु ।
गावहिं वेद पुरान, सुखकिलहहिंबिनुहरिभगति ॥
कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव, कोटि यतन पचिपचि मरै ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिनु संतोष न काम नशाहीं । कामअछत सुख सपनेहुँनाहीं ॥
रामभजन बिनु मिटहिं न कामा । थलविहीनतरुकबहुँकिजामा ॥
विना ज्ञान की समता आवै । कोउअवकाशकिनभबिनुपावै ॥
श्रद्धा विना धर्म नहिं होई । बिनु महि गन्ध कि पावै कोई ॥
बिनु तप तेज कि करु विस्तारा । जल बिनु रस कि होइ संसारा ॥
शील कि मिलु बिनुबुधसेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गुसाई ॥
निजसुख बिनुमनहोइ कि थीरा । परस कि होइ विहीन समीरा ॥
कवनिउँसिद्धिकिबिनुविश्वासा । बिनुहरिभजन न भवभयनासा ॥

दो० बिनु विश्वास भक्तिनहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम ।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ, मन कि लहै विश्रामा ॥

सो० अस विचारि मतिधीर,तजिकुतर्कसंशयसकल ।
भजहु राम रणधीर, करुणाकरसुन्दरसुखद ॥

निजमति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥
कह्यों न कछुकरि युक्तिबिशेखी । यह सब मैं निज नयनन देखी ॥
महिमा नाम रूप गुण गाथा । सकल अमितअनन्तरघुनाथा ॥
निजनिजमतिमुनिहरिगुणगावहिं ।निगमशेषशिवपारनपावहिं ॥
तुम्हें आदि खग मशक प्रयन्ता । नभउड़ाहिं नहिं पावहिं अन्ता ॥
तिमि रघुपतिमहिमा अवगाहा । तात कबहुँ कोउ पावकिथाहा ॥
रामकाम शतकोटि सुभगतन । दुर्गाकोटि अमित अरिमर्दन ॥
शक्रकोटि शतसरिस बिलासा । नभशतकोटिअमित अवकासा ॥

दो० मरुत कोटिशत विपुलबल, रवि शतकोटि प्रकास ।
शशि शतकोटि सुशीतल, शमन सकल भवत्रास ॥
कालकोटि शतसरिसअति, दुस्तर दुर्ग दुरन्त ।
धूम्रकेतु शतकोटि सम, दुराधर्ष भगवन्त ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रभु अगाध शतकोटि पताला । शमनकोटिशत सरिस कराला ॥
तीरथ अमित कोटिशत पावन । नामअखिलअघपुञ्जनशावन ॥
हिमगिरि कोटि अचलरघुवीरा । सिन्धु कोटिशत सरिस गँभीरा ॥
कामधेनु शतकोटि समाना । सकल कामदायक भगवाना ॥
शारद कोटि अमित चतुराई । विधिशतकोटिअमितनिपुणाई ॥
विष्णु कोटिशत पालनकर्ता । रुद्र कोटि शत सम संहर्ता ॥
धनद कोटिशत सम धनवाना । माया कोटि प्रपञ्च निधाना ॥
धराधरण शतकोटि अहीशा । निरवधिनिरुपमप्रभुजगदीशा ॥

छं० निरवधि निरूपम रामसम नहिं आन निगमागम कहैं ।
जिमि कोटिशतखद्योतरविकहँ कहतअति लघुतालहैं ॥
इहिभांतिनिजनिज मतिविलासमुनीश हरिहिबखानहीं ।
प्रभु भावगाहक अतिकृपालु सप्रेम सुनि सुख पावहीं ॥

दो० राम अमित गुणसागर, थाह कि पावै कोइ ।
सन्तनसन जसकछुसुनेउँ, तुमहिं सुनायउँ सोइ ॥

सो० भाव वश्य भगवान, सुखनिधान करुणाभवन ।
तजिममता मदमान, भजिय राम सीतारमण ॥

सुनि भुशुण्डि के वचन सुहाये । हर्षित खगपति पंख फुलाये ॥
नयन नीर मन अति हर्षाना । श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥
पाछिल मोहसमुझि पछिताना । ब्रह्मअनादि मनुजकरिजाना ॥
पुनि पुनि कागचरणशिरनावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥
गुरु बिनु भवनिधि तरै न कोई । जो बिरञ्चि शंकर सम होई ॥
संशय सर्प ग्रसेउ मोहिं ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहुब्राता ॥
तव स्वरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहिंजियायहुजनसुखदायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नशाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० ताहि प्रशंसेउ विविधविधि, शीश नाइ कर जोरि ।
वचन सप्रेम विनीत मृदु, बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥
प्रभु अपने अविवेक ते, पूछौं स्वामी तोहिं ।
कृपासिन्धु सादर कहहु, जानि दास निज मोहिं ॥

तुम सर्वज्ञ तज्ञ तम पारा । सुमति सुशील सरल आचारा ॥
ज्ञान विरति विज्ञान निवासा । रघुनायक के प्रिय तुम दासा ॥
कारण कवन देह यह पाई । तात सकल मोहिं कहहु बुझाई ॥
रामचरित सर सुन्दर स्वामी । पायहु कहां कहहु नभगामी ॥
नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं । महाप्रलयमहँ क्षय तव नाहीं ॥
मृषा वचन नहिं शंकर कहहीं । सो मेरे मन संशय अहहीं ॥
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकल जग कालकलेवा ॥
अण्डकटाह अमित लयकारी । काल महादुरतिक्रम भारी ॥

सो० तुमहिं न व्यापै काल, अतिकराल कारण कवन ।
सो मोहिं कहहु कृपाल, ज्ञानप्रभाव कि योगबल ॥

दो० प्रभु तव आश्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग ।
कारण कवन सो नाथ अब, कहहु सहित अनुराग ॥

गरुड़ गिरा सुनि हर्षेउ कागा । बोलेउ वचन सहित अनुरागा ॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रश्न तुम्हारि मोहिं अतिप्यारी ॥
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई । बहुत जन्मकी सुधि मोहिं आई ॥
अब निज कथा कहौं मैं गाई । तात सुनहु सादर मनलाई ॥
जप तप मख शम दम व्रत दाना । विरति विवेक योग विज्ञाना ॥
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा । तेइ बिनु कोइ न पावै क्षेमा ॥
इहिं तनु रामभक्ति मैं पाई । ताते मोहिं ममता अधिकाई ॥

सो० पन्नगारि असि नीति, श्रुति सम्मत सज्जन कहहिं ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अतिनीचहु सन प्रीति, करिय जानि निज परमहित ॥
पाट कीट ते होइ, ताते पाटम्बर रुचिर ।
कृमि पालै सब कोइ, परम अपावन प्राण सम ॥
स्वारथ सर्व जीव कहँ एहा । मन क्रम वचन रामपद नेहा ॥
सोइ पावन सोइ सुभग शरीरा । जो तनु पाइ भजिय रघुवीरा ॥
राम विमुखलहि विधिसम देही । कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही ॥
रामभक्ति यहि तन महँ जामी । ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी ॥
तजौं न तन निज इच्छामरणा । तनु बिनु वेद भजन नहिंबरणा ॥
प्रथम मोह मोहिं बहुत बिगोवा । रामविमुख सुख कबहुँ न सोवा ॥
नाना जन्म कर्म पुनि नाना । किये योग जप तप मख दाना ॥
कवन योनि जन्मेहुँ जहँ नाहीं । मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जगमाहीं ॥
देखेउँ सब करि कर्म गुसाईं । सुखी न भयउँ अबहिं की नाईं ॥
सुधि मोहिं नाथ जन्म बहु केरी । शिवप्रसाद मति मोह न घेरी ॥
दो० प्रथम जन्म के चरित सब, कहौं सुनहु विहगेश ।
सुनि प्रभुपद रति ऊपजै, जाते मिटै कलेश ॥
पूरब कल्पते एक प्रभु, कलियुग मलकर मूल ।
नर अरु नारि अधर्मरत, सकल निगम प्रतिकूल ॥
तेहि कलियुग कोशलपुर जाई । जन्मत भयउँ शूद्रतनु पाई ॥
शिवसेवक मन क्रम अरु बानी । आन देव निन्दक अभिमानी ॥
धन मदमत्त परम वाचाला । उग्र बुद्धि उर दम्भ विशाला ॥
यदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । तदपि नहीं महिमा कछु जानी ॥
अब जाना मैं अवध प्रभावा । निगमागम पुराण अस गावा ॥
कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई । रामपरायण सो फुर होई ॥
अवध प्रभाव जान तब प्राणी । जब उर बसहिं राम धनुपाणी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सो कलिकाल कठिन उरगारी । पापपरायण सब नर नारी ॥

दो० कलिमल ग्रसेउ धर्म सब, गुप्त भये सद्ग्रन्थ ।
दम्भिन निजमतिकल्पिकर, प्रकट कीन्ह बहुपन्थ ॥
भये लोग सब मोहबश, लोभ ग्रसे शुभ कर्म ।
सुनु हरियान ज्ञाननिधि, कहों कछुक कलिधर्म ॥

वर्ण धर्म नहिं आश्रमचारी । श्रुति विरोधरत सब नर नारी ॥
द्विजश्रुतिबेचकभूपप्रजाशन । कोउनहिंमानुनिगमअनुशासन ॥
मारग सोइ जाकहँ जो भावा । पण्डित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्यारम्भ दम्भ रत जोई । ताकहँ सन्त कहैं सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधनहारी । जो करु दम्भ सो बड़ आचारी ॥
जो कछु झूठ मसखरी जाना । कलियुगसोइगुणवन्तबखाना ॥
निराचार जो श्रुतिपथत्यागी । कलियुग सोइ ज्ञानी बैरागी ॥
जाके नख अरु जटा विशाला । सोइ तापस प्रसिद्ध तेहिकाला ॥

दो० अशुभ वेष भूषण धरैं, भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं ।
ते योगी ते सिद्ध नर, पूज्य ते कलियुगमाहिं ॥
सो० जे अपकारी चार, तिनकरगौरव मान्यता ।
मन क्रम वचन लबार, ते वक्ता कलिकाल महँ ॥

नारि विवश नर सकल गुसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं ॥
शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना । मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर काम लोभरत क्रोधी । देव विप्र गुरु सन्त विरोधी ॥
गुणमन्दिर सुन्दरपति त्यागी । भजहिं नारि परपुरुष अभागी ॥
सौभागिनी विभूषण हीना । बिधवन कहँ शृंगार नवीना ॥
गुरु शिष अन्धबधिरकर लेखा । एक न सुनी एक नहिं देखा ॥
हरै शिष्यधन शोक न हरई । सो गुरु घोर नरक महँ परई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मात पिता बालकन्ह बुलावहिं । उदरभरै सोइ कर्म सिखावहिं ॥
दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात ।
कौड़ी कारण मोहवश, करहिं विप्र गुरुघात ॥
वाद शूद्रकह द्विजनसन, हम तुम ते कछु घाटि ।
जानै ब्रह्म सो विप्रवर, आंखिदिखावहिं डाटि ॥
परतिय लम्पट कपट सयाने । मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर । देखा मैं चरित्र कलियुगकर ॥
आपु गये अरु आनहिं घालहिं । जेकोउ श्रुतिमारगप्रतिपालहिं ॥
कल्पकल्प भरि इकइक नरका । परहिं जे दूषहिं श्रुतिकरि तरका ॥
जे वर्णाधम तेलि कुम्हारा । श्वपचकिरातकोल्ह कलवारा ॥
नारि मुई गृह सम्पति नासी । मूड़ मुड़ाय भये संन्यासी ॥
ते विप्रन सन पांव पुजावहिं । उभयलोकनिजहाथनशावहिं ॥
विप्र निरक्षर लोलुप कामी । निराचार शठ वृषलीस्वामी ॥
शूद्र करहिं जप तप व्रत दाना । बैठि वरासन कहहिं पुराना ॥
सब नर कल्पित करहिं अचारा । जाइ न बरणि अनीतिअपारा ॥
दो० भये वर्णसंकर कलिहि, भिन्न सेतु सब लोग ।
करहिं पाप दुख पावहीं, भय रुज शोक वियोग ॥
श्रुति सम्मतहरिभक्तिपथ, संयुत ज्ञान विवेक ।
ते न चलहिं नरमोहवश, कल्पहिं पन्थ अनेक ॥
छं० बहुधाम सँवारहिं योगियती । विषया हरिलीन्ह गई विरती ॥
तपसी धनवन्त दरिद्र गृही । कलिकौतुकतात न जातकही ॥
कुलवन्तिनिकारहिंनारिसती । गृहआनहिं चेरिहिं चोरगती ॥
सुतमानहिंमातपितातबलौं । अबलानन दीख नहीं जबलौं ॥
ससुरारिपियारिलगी जबतें । रिपुरूप कुटुम्ब भये तबतें ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नृप पाप परायण धर्म नहीं । करु दण्डविदण्ड प्रजा नितहीं ॥
धनवन्त कुलीन मलीन अपी । द्विज चिह्न जनेउ उघार तपी ॥
नहिं मान पुराणहिं वेदहिं जो । हरिसेवक सन्त सही कलि सो ॥
कविवृन्द उदारधुनी न सुनी । गुणदूषक व्रातन कोपि गुनी ॥
कलि बारहिबार दुकाल परैं । बिनु अन्न दुखी बहुलोग मरैं ॥

दो० सुनु खगेश कलिकपटहठ, दम्भ द्वेष पाखण्ड ।
काम क्रोध लोभादि मद, व्यापिरहे ब्रह्मण्ड ॥
तामस धर्म करहिं नर, जप तप मख व्रतदान ।
देव न बरषैं धरणि पर, बये न जामहिं धान ॥

छं० अबलाकचभूषण भूरि क्षुधा । धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता । मतिथोरिकठोरि न कोमलता ॥
नरपीड़ित रोग न भोग कहीं । अभिमान विरोध अकारणहीं ॥
लघुजीवन संवत पञ्चदशा । कल्पान्तन नाशगुमानअशा ॥
कलिकालविहालकियेमनुजा। नहिंमानतकोउअनुजातनुजा॥
नहिंतोषविचार न शीतलता । सब जातिकुजातिभये मँगता ॥
इरषा परुषा छल लोलुपता । भरिपूरिरही समता विगता ॥
सबलोग बियोगविशोकहये । वर्णाश्रम धर्म अचार गये ॥
दमदानदयानहिं जानपनी । जड़ता परिपञ्चकतात घनी ॥

दो० सुनु व्यालारि कराल कलि, मल अवगुण आगार ।
गुणहु बहुत कलिकालकर, बिनु प्रयास निस्तार ॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहु, पूजा मख अरु योग ।
जो गति होइ सो कलि हरि, नामते पावहिं लोग ॥

कृतयुग सब योगी विज्ञानी । करिहरिध्यान तरहिं भवप्रानी ॥
त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं । प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

द्वापर करि रघुपतिपद पूजा । नर भव तरहिं उपाय न दूजा ॥
कलिकेवल हरिगुणगण गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा ॥
कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना । एक अधार रामगुण गाना ॥
सब भरोस तजि जो भजरामहिं । प्रेम समेत गाव गुणग्रामहिं ॥
सो भव तरु कछु संशय नाहीं । नाम प्रताप प्रकट कलिमाहीं ॥
कलिकर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुण्य होइ नहिं पापा ॥

दो० कलियुगसम युग आन नहिं, जो नर करु विश्वास ।
गाइ राम गुणगण विमल, भव तरु बिनहिं प्रयास ॥
प्रकट चारि पद धर्म के, कलिमहँ एक प्रधान ।
येन केन विधि दीन्हें, दान करै कल्यान ॥

कृतयुग धर्म होहिं सब केरे । हृदय राम माया के प्रेरे ॥
शुद्ध सत्त्व समता विज्ञाना । कृतप्रभाव प्रसन्न मन जाना ॥
सत्त्व बहुत कछु रज रति कर्मा । सब विधि शुभ त्रेताकर धर्मा ॥
बहु रज सत्त्व स्वल्प कछु तामस । द्वापर धर्म हर्ष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुण थोरा । कलिप्रभाव विरोध चहुँओरा ॥
बुध युग धर्म जानि मनमाहीं । तजि अधर्म रतधर्म कराहीं ॥
कालकर्म नहिं व्यापहिं ताही । रघुपतिचरण प्रीति अति जाही ॥
नटकृत कपट विकट खगराया । नट सेवकहिं न व्यापै माया ॥

दो० हरिमायाकृत दोष गुण, बिनु हरि भजन न जाहिं ।
भजियराम सबकाम तजि, अस विचारि मनमाहिं ॥
तेहि कलिकाल वर्ष बहु, बसेउँ अवध विहगेश ।
परेउ दुकाल विपत्ति वश, तब मैं गयेउँ बिदेश ॥

गयउँ उजैन सुनहु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गये काल कछु सम्पति पाई । तहँ पुनि करौं शम्भु सेवकाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विप्र एक वैदिक शिव पूजा । करै सदा तेहि काज न दूजा ॥
परमसाधु परमारथ विन्दक । शम्भुउपासकनहिंहरिनिन्दक ॥
सेवों मैं तेहि कपट समेता । द्विजदयालअतिनीतिनिकेता ॥
बाहिर नम्र देखि मोहिं साईं । विप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं ॥
शम्भुमन्त्र मोहिं द्विजवर दीन्हा । शुभउपदेशविविधविधिकीन्हा ॥
जपौं मन्त्र शिवमन्दिर जाई । हृदयदम्भ अहमितिअधिकाई ॥

दो० मैं खलमल संकुलमति, नीचजाति वश मोह ।
द्विज हरिजन देखतजरौं, करौं विष्णु करद्रोह ॥

सो० गुरु नित मोहिं प्रबोध, दुखितदेखिआचरणमम ।
मोहिं उपजै अति क्रोध, दम्भिहिनीतिकि भावई ॥

एकबार गुरु लीन्ह बुलाई । मोहिं नीति बहुभांति सिखाई ॥
शिवसेवा कर फल सुत सोई । अविरल भक्ति रामपद होई ॥
रामहिं भजहिं तात शिव धाता । नर पामरकर केतिक बाता ॥
जासुचरण शिव अज अनुरागी । तासु द्रोह सुख चहसि अभागी ॥
हरकहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ । सुनि खगनाथ हृदय ममदहेऊ ॥
अधम जाति मैं विद्या पाये । भयउँ यथा अहि दूध पियाये ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुरुसन द्रोह करौं दिनराती ॥
अतिदयालु गुरु स्वल्प न क्रोधा । पुनिपुनि मोहिंसिखावसुबोधा ॥
ज्यहि ते नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा ॥
धूम अनल सम्भव सुन भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥
रज मगु परी निरादर रहई । सबकर पदप्रहार नित सहई ॥
मरुत उड़ाइ प्रथम तेहि भरई । पुनि नृपनयन किरीटन्ह परई ॥
सुनखगपतिअससमुझिप्रसंगा । बुध न करहिं अधमनकर संगा ॥
कवि कोविद गावहिंअसनीती । खलसनकलह न भलसन प्रीती ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उदासीन बरु रहिय गुसाईं । खल परिहरिय श्वानकी नाईं ॥
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई । गुरु हित कहैं न मोहिं सोहाई ॥
दो० एक बार हरमन्दिर, जपत रहेउँ शिवनाम ।
गुरु आये अभिमानते, उठिनहिं कीन्हप्रणाम ॥
सो दयालु नहिं कहेउकछु, उर न रोष लवलेश ।
अतिअघ गुरुअपमानता, सहि नहिं सके महेश ॥
मन्दिर मांझ भई नभ बानी । रे हतभाग्य अधम अभिमानी ॥
यद्यपि तव गुरु स्वल्प न क्रोधा । अतिकृपालु चित सम्यकबोधा ॥
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं । नीतिविरोध सुहात न मोहीं ॥
जो नहिं करौं दण्ड शठ तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा ॥
जे शठ गुरुसन ईर्षा करहीं । रौरव नरक कल्पशत परहीं ॥
त्रिजगयोनि पुनिधरहिं शरीरा । अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा ॥
बैठि रहसि अजगर इव पापी । होसि सर्प खलमलमतिब्यापी ॥
महा विटप कोटर महँ जाई । रहु रे अधम अधोगति पाई ॥
दो० हाहाकार कीन्ह गुरु, सुनिदारुणशिवशाप ।
कम्पितमोहिंबिलोकिअति, उर उपजा परिताप ॥
करि दण्डवत सप्रेम गुरु, शिवसम्मुखकरजोरि ।
विनय करत गद्गद गिरा, समुझिघोरगतिमोरि ॥
छं० नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं । विभुंव्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ॥
अजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं । चिदाकाशमाकाशवासंभजेहं ॥
निराकार मोंकारमूलं तुरीयं । गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं ॥
करालं महाकालकालंकृपालं । गुणागारसंसारपारं नतोहं ॥
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गँभीरं । मनोभूतकोटिप्रभासी शरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगङ्गा । लसद्भालबालेन्दुकण्ठेभुजङ्गा ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयीशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं । भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी । सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्द संदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावत् उमानाथपादारविन्दं । भजन्तीह लोके परे वा नराणां ॥
नतावत्सुखं शान्ति संतापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोहं सदासर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जराजन्म दुःखौघता तप्यमानं । प्रभोपाहिशापान्नमामीशशंभो॥

श्लो० रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं, विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

दो० सुनि बिनती सर्वज्ञ शिव, देखि विप्र अनुरागु ।
पुनि मन्दिर नभवाणिभइ, हे द्विजवर वर मांगु ॥
जो प्रसन्न प्रभु मोहिंपर, नाथ दीनपर नेहु ।
निजपद भक्ति देहु प्रभु, पुनि दूसर वर देहु ॥
तव मायावश जीव जड़, सन्तत फिरै भुलान ।
तेहिपरक्रोध न करियप्रभु, कृपासिन्धु भगवान ॥
शंकर दीनदयालु अब, यहि पर होहु कृपाल ।
शापानुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरही काल ॥

इहिकर होइ परम कल्याना । सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥
विप्रगिरा सुनि परहित सानी । एवमस्तु इति भइ नभबानी ॥
यदपि कीन्ह यह दारुण पापा । मैं पुनि दीन्ह क्रोधकरि शापा॥
तदपि तुम्हारि साधुता देखी । करिहौं इहिपर कृपा विशेखी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्षमा शील जे पर उपकारी । ते द्विज प्रिय मोहिं यथा खरारी ॥
मोर शाप द्विज मृषा न होई । जन्म सहस्र पाव यह सोई ॥
जन्मत मरत दुसह दुख होई । इहिकहँ स्वल्प न व्यापिहिसोई ॥
कौनिहुँजन्म मिटिहि नहिंज्ञाना । सुनहु शूद्र मम वचन प्रमाना ॥
रघुपतिपुरी जन्म तव भयऊ । पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ ॥
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे । रामभक्ति उपजहि उर तोरे ॥
सुन मम वचन सत्य अब भाई । हरितोषक व्रत द्विजसेवकाई ॥
अब जनि करसि विप्रअपमाना । जानसि ब्रह्म अनन्त समाना ॥
इन्द्रकुलिश ममशूल विशाला । कालदण्ड हरिचक्र कराला ॥
जो इनकर मारा नहिं मरई । विप्ररोष पावक सो जरई ॥
अस विवेक राखेहु मनमाहीं । तुमकहँ जग दुर्लभकछु नाहीं ॥
औरौ एक आशिषा मोरी । अव्याहत गति होइहि तोरी ॥

दो० सुनि शिववचन सप्रेम गुरु, एवमस्तु इतिभाखि ।
मोहिं प्रबोधि गयउ गृह, शम्भुचरण उरराखि ॥
प्रेरित काल विन्ध्यगिरि, जाय भयउँ मैं व्याल ।
बिनु प्रयास सो तनु तजेउँ, नाथ थोरही काल ॥
जो तनुधरौं सो तजौं पुनि, अनायास हरियान ।
जिमि नूतन पट पहिरिकै, नर परिहरै पुरान ॥
शिवराखेउ श्रुति नीतिविधि, मैं नहिं पाव कलेश ।
इहिविधि धरेउँ विविधतनु, ज्ञान न गयउखगेश ॥

त्रिजगयोनि जो जो तनु धरेऊं । तहँ तहँ रामभक्ति अनुसरेऊं ॥
एकशूल मोहिं बिसरु न काऊ । गुरुकर कोमल शील स्वभाऊ ॥
परमदेह द्विजकर मैं पाई । सुरदुर्लभ पुराण श्रुति गाई ॥
खेलौं तहां बालकन मीला । करौं सकल रघुनायक लीला ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रौढ़ भये मोहिं पिता पढ़ावा । समुझौं सुनौं गुनौं नहिं भावा ॥
मनते सकल वासना भागी । केवल रामचरण लयलागी ॥
कहु खगेश अस कवन अभागी । खरी सेव सुरधेनुहिं त्यागी ॥
प्रेममगन मोहिं कछु न सुहाई । हारेउ पिता पढ़ाय पढ़ाई ॥
भयउ कालवश जब पितुमाता । मैं वन गयउँ भजन जनत्राता ॥
जहँ जहँ विपिन मुनीश्वर पावों । आश्रम जाइ जाइ शिर नावों ॥
पूछौं तिनहिं रामगुण गाहा । कहौं सुनौं हर्षित खगनाहा ॥
सुनत फिरौं हरिगुण अनुवादा । अव्याहत गति शम्भु प्रसादा ॥
छूटी त्रिविध एषणा गाढ़ी । एक लालसा उर अतिबाढ़ी ॥
रामचरण पंकज जब देखौं । तब निज जन्मसुफलकरिलेखौं ॥
जेहि पूछौं सो मुनि अस कहई । ईश्वर सर्व भूतमय अहई ॥
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई । सगुण ब्रह्मरति उर अधिकाई ॥

दो० गुरु के वचन सुरतिकरि, रामचरण मन लाग ।
रघुपति यश गावत फिरौं, क्षण क्षण नव अनुराग ॥
मेरु शिखर वट छाया, मुनि लोमश आसीन ।
देखि चरण शिर नायउँ, वचन कहेउँ अतिदीन ॥
सुनिममवचन विनीतमृदु, मुनि कृपालु खगराज ।
मोहिं सादर बूझत भयउ, द्विज आयउ केहिकाज ॥
तब मैं कहेउँ कृपानिधि, तुम सर्वज्ञ सुजान ।
सगुण ब्रह्म अवराधना, मोहिं कहहु भगवान ॥

तब मुनीश रघुपति गुणगाथा । कहेउ कछुक सादर खगनाथा ॥
ब्रह्मज्ञान रत मुनि विज्ञानी । मोहिं परम अधिकारी जानी ॥
लागे करन ब्रह्म उपदेशा । अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ॥
अकल अनीह अनाम अरूपा । अनुभवगम्य अखण्ड अनूपा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मन गोतीत अमल अविनाशी । निर्विकार निरवधि सुखराशी ॥
सो तें ताहि तोहिं नहिं भेदा । वारिवीचि इव गावहिं वेदा ॥
विविधभांति मोहिंमुनिसमुझावा । निर्गुणमतममहृदय न आवा ॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद शीशा । सगुण उपासन कहहु मुनीशा ॥
रामभक्ति जल मम मन मीना । किमि बिलगाइ मुनीशप्रवीना ॥
सोइ उपदेश कहहु करि दाया । निज नयनन देखौं रघुराया ॥
भरिलोचन विलोकि अवधेशा । तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा ॥
पुनि मुनि कह हरिकथा अनूपा । खण्डिसगुणमत अगुणनिरूपा ॥
तब मैं निर्गुण मत करि दूरी । सगुण निरूपों करि हठ भूरी ॥
उत्तर प्रत्युत्तर मैं दीन्हा । मुनिउर भयउ क्रोधकर चीन्हा ॥
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये । उपज क्रोध ज्ञानिहुँ के हिये ॥
अति संघर्षण करै जो कोई । अनल प्रकट चन्दन ते होई ॥

दो० बारहिंबार सकोपि मुनि, करहिं निरूपण ज्ञान ।
मैं अपने मन बैठि तब, करौं विविध अनुमान ॥
क्रोध कि द्वैतक बुद्धि बिनु, द्वैत कि बिनु अज्ञान ।
मायावश परिछिन्न जड़, जीव कि ईश समान ॥

कबहुँक दुख सबकर हित ताके । तेहि कि दरिद्र परसमणि जाके ॥
कामी पुनि कि रहै निकलङ्का । परद्रोही कि होइ निःशङ्का ॥
वंशकि रह द्विजअनहित कीन्हें । कर्मकि होहिं स्वरूपहि चीन्हे ॥
काहू सुमति कि खलसँगजामी । शुभगतिपाव कि परतियगामी ॥
राज कि रहै नीति बिनु जाने । अघकि रहै हरिचरित बखाने ॥
भव कि परहिं परमारथविन्दक । सुखी कि होहिंकबहुँपरनिन्दक ॥
पावन यश कि पुण्य बिनु होई । बिनु अघ अयश कि पावै कोई ॥
लाभ कि कछु हरिभक्ति समाना । जेहि गावहिंश्रुतिसन्तपुराना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हानिकि जग इहिसम कछु भाई । भजिय न रामहिं नरतनु पाई ॥
अघ कि विनातामस कछुआना । धर्म कि दयासरिस हरियाना ॥
इहिविधिअमितयुक्ति मनगुनेऊं । मुनि उपदेश न सादर सुनेऊं ॥
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा । तब मुनि बोले वचन सकोपा ॥
मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि । उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि ॥
सत्य वचन विश्वास न करही । बायस इव सबहीसन डरही ॥
शठ सपक्ष तव हृदय विशाला । सपदि होहु पक्षी चण्डाला ॥
लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई । नहिं कछुभय न दीनताआई ॥

दो० तुरत भयउँ मैं काग तब, पुनि मुनिपद शिर नाइ ।
सुमिरि राम रघुवंशमणि, हर्षित चलेउँ उड़ाइ ॥
उमा जो रामचरणरत, विगत काम मद क्रोध ।
निजप्रभुमयदेखहिंजगत, कासन करहिं विरोध॥

सुनु खगेश नहिंकछुऋषिदूषण । उरप्रेरक रघुवंश विभूषण ॥
कृपासिन्धु मुनिमति करि भोरी । लीन्ही प्रेम परीक्षा मोरी ॥
मन क्रम वचन मोहिंजनजाना । मुनिमति पुनि फेरी भगवाना ॥
ऋषि मम सहज शीलता देखी । रामचरण विश्वास विशेखी ॥
अति विस्मय पुनिपुनि पछिताई । सादर मुनिमोहिंलीन्ह बुलाई ॥
मम परितोष विविधविधि कीन्हा । हर्षित राममन्त्र मोहिं दीन्हा ॥
बालकरूप राम कर ध्याना । कहेउ मोहिंमुनि कृपानिधाना ॥
सुन्दर सुखद मोहिं अति भावा । जो प्रथमहिं मैं तुमहिंसुनावा ॥
मुनिमोहिं कछुककाल तहँ राखा । रामचरित मानस सब भाखा ॥
सादर मोहिं यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
राम चरित सर गुप्त सुहावा । शम्भु प्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहिं निज भक्त रामकर जानी । ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम भक्ति जिन के उर नाहीं । कबहुँ न तात कहियतेहिंपाहीं ॥
मुनिमोहिंविविधभांतिसमुझावा । मैं सप्रेम मुनिपद शिरनावा ॥
निजकरकमल परसि ममशीशा । हर्षित आशिष दीन्ह मुनीशा ॥
राम भक्ति अविरल उर तोरे । बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे ॥

दो० सदा राम प्रिय होब तुम, शुभगुण भवन अमान ।
कामरूप इच्छा मरण, ज्ञान विराग निधान ॥
जेहिआश्रम तुमबसबपुनि, सुमिरत श्रीभगवन्त ।
व्यापिहि तहँ न अविद्या, योजन यक पर्यन्त ॥

काल कर्म गुण दोष स्वभाऊ । कछुदुखतुमहिंन व्यापिहिकाऊ ॥
रामरहस्य ललित विधिनाना । गुप्त प्रकट इतिहास पुराना ॥
बिनु श्रम तुम सब जानब सोऊ । नित नव प्रेम रामपद होऊ ॥
जो इच्छा करिहौ मन माहीं । हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनिमुनिआशिष सुनु मतिधीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥
एवमस्तु तव वच मुनिज्ञानी । यह मम भक्त कर्म मन बानी ॥
सुनि नभगिरा हर्ष मम भयऊ । प्रेममगन मन संशय गयऊ ॥
करि बिनती मुनि आयसु पाई । पदसरोज पुनिपुनि शिरनाई ॥
हर्षसहित इहि आश्रम आयउँ । प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पायउँ ॥
इहां बसत मोहिं सुन खगईशा । बीते कल्प सात अरु बीशा ॥
करौं सदा रघुपति गुण गाना । सादर सुनहिं विहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुवीरा । धरहिं भक्तहित मनुज शरीरा ॥
तब तब जाइ अवधपुर रहहूं । शिशुलीला विलोकिसुखलहहूं ॥
पुनि उर राखि राम शिशुरूपा । इहि आश्रम आवों खगभूपा ॥
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई । काकदेह जेहि कारण पाई ॥
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी । रामभक्ति महिमा अतिभारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० ताते यह तनु मोहिं प्रिय, भयउ रामपद नेह ।
निजप्रभु दरशन पायऊँ, गयउ सकल सन्देह ॥
भक्तिपक्ष हठ करि रहेउँ, दीन्ह महाऋषि शाप ।
मुनिदुर्लभ वर पायऊँ, देखहु भजन प्रताप ॥
जे अस भक्ति जानि परिहरहीं । केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी । खोजत आकफिरहिंपयलागी ॥
सुनु खगेश हरि भक्ति विहाई । जो सुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते शठ महासिन्धु बिनु तरणी । पैरि पार चाहत जड़ करणी ॥
सुनि भुशुण्डिके वचन भवानी । बोलेउ गरुड़ हर्षि मृदुबानी ॥
तव प्रसाद प्रभु मम उरमाहीं । संशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥
सुनेउँ पुनीत रामगुण ग्रामा । तुम्हरी कृपा लहेउँ विश्रामा ॥
एक बात प्रभु पूछौं तोहीं । कहहुबुझाइ कृपानिधि मोहीं ॥
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना । नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना॥
सो मुनि तुमसन कहेउँ गोसाईं । नहिं आदरेउ भक्ति की नाईं ॥
ज्ञानहिं भक्तिहि अन्तर केता । सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता॥
सुनि उरगारि वचन सुखमाना । सादर बोलेउ काकसुजाना ॥
ज्ञानहिं भक्तिहि नहिं कछु भेदा । उभय हरहिं भवसम्भव खेदा ॥
नाथ मुनीश कहहिं कछुअन्तर । सावधान होइ सुनहु विहगवर॥
ज्ञान विराग योग विज्ञाना । ये सब पुरुष सुनहु हरियाना ॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भांती । अबलाअबल सहजजड़जाती॥
दो० पुरुष त्यागिसक नारिकहँ, जो बिरक्त मतिधीर ।
नहिं तो कामी विषयवश, विमुख जो पद रघुवीर ॥
सो० सो मुनि ज्ञाननिधान, मृगनयनीविधुमुखनिरखि ।
विकल होहिं हरियान, नारि विरचि माया प्रकट ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहां न पक्ष तात कछु राखों । वेद पुराण सन्तमत भाखों ॥
मोह न नारि नारि के रूपा । पन्नगारि यह नीति अनूपा ॥
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ । नारि वर्ग जानै सब कोऊ ॥
पुनि रघुवीरहिं भक्ति पियारी । माया खल नर्त्तकी विचारी ॥
भक्तिहि सानुकूल रघुराया । ताते तेहि डरपति अतिमाया ॥
राम भक्ति निरुपम निरुपाधी । बसै जासु उर सदा अबाधी ॥
तेहि विलोकि माया सकुचाई । करि न सकै कछु निजप्रभुताई ॥
अस विचारि जो मुनि विज्ञानी । याचहिं भक्तिसकलगुणखानी ॥

दो० यह रहस्य रघुनाथकर, बेगि न जानै कोइ ।
जाने ते रघुपति कृपा, सपनेहुँ मोह न होइ ॥
अवरौ ज्ञान भक्ति कर, भेद सुनहु परवीण ।
जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अवक्षीण ॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी । समुझतबनै न जात बखानी ॥
ईश्वर अंश जीव अविनाशी । जोतनुअमलसहज सुखराशी ॥
सो मायावश भयउ गुसाईं । बँध्यो कीर मर्कट की नाईं ॥
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परिगई । यदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
तब ते जीव भयो संसारी । ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी ॥
श्रुति पुराण बहु कहैं उपाई । छूट न अधिकअधिकअरुझाई ॥
जीव हृदय तम मोह विशेखी । ग्रन्थि छुटै किमि परै न देखी ॥
अस संयोग ईश जब करई । तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ॥
सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । जो हरिकृपा हृदय बस आई ॥
जप तप संयम नियम अपारा । जो श्रुति कहै सुधर्म अचारा ॥
ये तृण हरित चरै जब गाई । भाव वत्स शिशु पाइ पन्हाई ॥
नोइ निवृत्ति पात्र विश्वासा । निर्मलमन अहीर निजदासा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परम धर्ममय पय दुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई ॥
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै । धृति सम जावन देइ जमावै ॥
मुदिता मथै विचार मथानी । दम अधार रजु सत्य सुबानी ॥
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता । विमल विराग सुभग सुपुनीता ॥

दो॰ योग अग्निकर प्रकट तब, कर्म शुभाशुभ लाइ ।
बुद्धि सिरावै ज्ञानघृत, ममतामल जरिजाइ ॥
तब विज्ञान निरूपिणी, बुद्धि विशद घृत पाइ ।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़, समता दिअटि बनाइ ॥
तीनि अवस्था तीनि गुण, तेहि कपास ते काढ़ि ।
तूल तुरीय सँवारि पुनि, बाती करै सुगाढ़ि ॥

सो॰ यहि विधि लेसै दीप, तेज राशि विज्ञानमय ।
जातहि तासु समीप, जरहिं मदादिकशलभसब ॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखण्डा । दीपशिखा सोइ परम प्रचण्डा ॥
आतमअनुभव सुख सुप्रकाशा । तब भवमूल भेदभ्रम नाशा ॥
प्रबल अविद्याकर परिवारा । मोह आदि तब मिटै अपारा ॥
तब सेइ बुद्धि पाइ उजियारा । उरगृह बैठि ग्रन्थि निरवारा ॥
छोरन ग्रन्थि पाव जो सोई । तब यह जीव कृतारथ होई ॥
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया । विघ्न अनेक करै तब माया ॥
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई । बुद्धिहि लोभ दिखावै जाई ॥
कलबल छलकरि जाइ समीपा । अञ्चल बात बुझावै दीपा ॥
होइ बुद्धि जो परम सयानी । तिनतनचितवनअनहितजानी ॥
जो तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी । तो बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥
इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना । तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ॥
आवत देखहिं विषय बयारी । ते हठि देहिं कपाट उघारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जब सो प्रभञ्जन उर गृह जाई । तबहिं दीप विज्ञान बुझाई ॥
ग्रन्थि न छूटि मिटा सो प्रकाशा । बुद्धि विकलभइ विषय बताशा ॥
इन्द्रिय सुरन न ज्ञान सुहाई । विषय भोग पर प्रीति सदाई ॥
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहिविधि दीपको बारबहोरी ॥
दो० तब फिर जीव विविध विधि, पावै संसृति क्लेश ।
हरिमाया अति दुस्तर, तरि न जाइ विहगेश ॥
कहतकठिन समुझतकठिन, साधन कठिन विवेक ।
होइ घुणाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह अनेक ॥
ज्ञान कि पन्थ कृपाण कि धारा । परत खगेश न लागै बारा ॥
जो निर्विघ्न पन्थ निर्बहई । सो कैवल्य परमपद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद । सन्तपुराण निगम आगमवद ॥
रामभक्ति सो मुक्ति गुसाँई । अनइच्छित आवै बरिआई ॥
जिमिथलबिनुजलरहि न सकाई । कोटि भांति कोउ करै उपाई ॥
तथा मोक्षसुख सुन खगराई । रहि न सकै हरि भक्ति विहाई ॥
अस विचारि हरिभक्त सयाने । मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने ॥
भक्ति करत बिनु यतन प्रयासा । संसृतिमूल अविद्या नासा ॥
भोजन करिय तृप्तिहित लागी । जिमि सो अन्न पचेउ जठरागी ॥
अस हरिभक्ति सुगम सुखदाई । को असमूढ़ न जाहि सुहाई ॥
दो० सेवक सेव्यप्रभाव बिनु, भव न तरिय उरगारि ।
भजहु राम पदपंकज, अस सिद्धान्त विचारि ॥
जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनाथ कहँ, भजहिं जीव ते धन्य ॥
कहेउँ ज्ञान सिद्धान्त बुझाई । सुनहु भक्तिमणि की प्रभुताई ॥
रामभक्ति चिन्तामणि सुन्दर । बसै गरुड़ जाके उर अन्तर ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परम प्रकाश रूप दिन राती । नहिंकछु चहिय दियाघृतबाती ॥
मोह दरिद्र निकट नहिं आवहि । लोभबात नहिं ताहि बुझावहि ॥
प्रबल अविद्यातम मिटिजाई । हारत सकल शलभ समुदाई ॥
खलकामादि निकट नहिंजाहीं । बसै भक्तिमणि जेहि उरमाहीं ॥
गरल सुधासम अरिहित होई । तेहिमणि बिनु सुखपाव न कोई ॥
व्यापहिं मानस रोग न भारी । जेहिके वश सबजीव दुखारी ॥
रामभक्तिमणि उर बस जाके । दुख लवलेश न सपनेहुँ ताके ॥
चतुरशिरोमणि ते जग माहीं । जे मणिलागि सुयतन कराहीं ॥
सोमणि यदपि प्रकट जग अहई । रामकृपा बिनु कोऊ न लहई ॥
सुगम उपाइ पाइबे केरे । नर हतभाग्य देत भटभेरे ॥
पावन पर्वत बेद पुराना । रामकथा रुचिराकर नाना ॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ज्ञान विराग नयन उरगारी ॥
भाव सहित जो खोदै प्रानी । पाव भक्तिमणि सबसुखखानी ॥
मोरे मन प्रभु अस विश्वासा । रामते अधिक रामकर दासा ॥
राम सिन्धु घन सज्जन धीरा । चन्दनतरु हरि सन्त समीरा ॥
सबकर फल हरि भक्ति सुहाई । सो बिनु सन्त न काहू पाई ॥
अस विचारि जो करु सतसंगा । रामभक्ति तेहि सुलभ विहंगा ॥

दो० ब्रह्मपयोनिधि मन्दर, ज्ञान सन्तसुर आहि ।
कथासुधा मथि काढ़हीं, भक्तिमधुरता जाहि ॥
विरतिचर्म असिज्ञानमद, लोभ मोह रिपुमारि ।
जय पाई सोइ हरिभगति, देख खगेश विचारि ॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जो कृपालु मोहिं ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी । सप्त प्रश्न मम कहहु बखानी ॥
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा । सबते दुर्लभ कवन शरीरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बड़दुख कवन कवन सुख भारी । सो संक्षेपहि कहहु विचारी ॥
सन्त असन्त मर्म तुम जानहु । तिनकर सहजसुभावबखानहु ॥
कवनपुण्यश्रुतिविदित विशाला । कहहु कवनअघ परमकराला ॥
मानसरोग कहहु सब गाई । तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहु सादर अतिप्रीती । मैं संक्षेप कहौं यह नीती ॥
नर समान नहिं कवनिहुँ देही । जीव चराचर याचत जेही ॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग नसेनी । ज्ञान विराग भक्तिसुख देनी ॥
सो तनुधरि हरिभजहिं न जे नर । होयँ विषयरत मन्द मन्दतर ॥
कञ्चन कांच बदलि शठ लेहीं । करते डारि परसमणि देहीं ॥
नहिं दरिद्रसम दुख जगमाहीं । सन्तमिलनसमसुखकछुनाहीं ॥
पर उपकार वचन मन काया । सन्त सहजसुभाव खगराया ॥
सन्तसहहिं दुख परहित लागी । परदुखहेतु असन्त अभागी ॥
भुरजातरु सम सन्त कृपाला । परहितसहनितबिपतिविशाला॥
सन इव खल परबन्धन करही । खालकढ़ाइ बिपतिसहिमरही ॥
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
परसम्पदा विनाशि नशाहीं । जिमिकृषिहतिहिमउपलबिलाहीं॥
दुष्ट उदय जग आरति हेतू । यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥
सन्त उदय सन्तत सुखकारी । विश्वसुखद जिमिइन्दुतमारी ॥
परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा । परनिन्दा सम अघ न गरिसा ॥
हरि गुरुनिन्दक दादुर होई । जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥
द्विजनिन्दकबहुनरक भोगकरि । जग जन में बायसशरीर धरि ॥
सुरश्रुतिनिन्दक जो अभिमानी । रौरव नरक परहिं ते प्रानी ॥
होहिं उलूक सन्त निन्दारत । मोहनिशाप्रिय ज्ञान भानुगत ॥
सबकी निन्दा जे जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनहु तात अब मानस रोगा । जेहिते दुखपावहिं सबलोगा ॥
मोह सकल व्याधिनकर मूला । तेहिते पुनि उपजहिं बहुशूला ॥
काम वात कफ लोभ अपारा । क्रोधपित्त नित छाती जारा ॥
प्रीति करहिं जो तीनों भाई । उपजै सन्निपात दुखदाई ॥
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब शूल नाम को जाना ॥
ममता दद्रु कण्डु इरषाई । कुष्ट दुष्ट तामस कुटिलाई ॥
अहंकार जो दुखद डहरुआ । दम्भ कपट मद मान नहरुआ ॥
तृष्णा उदर वृद्धि अतिभारी । त्रिविध एषणा तरुण तिजारी ॥
युगविधिज्वर मत्सर अविवेका । कहँलगि कहौं कुरोग अनेका ॥

दो० एक व्याधिते नर मरहिं, ये असाध्य बहु व्याधि ।
सन्तत पीड़हिं जीव कहँ, सो किमिलहहिं समाधि ॥
नेम धर्म आचार तप, ज्ञान यज्ञ जप दान ।
भेषज पुनि कोटिन करहिं, रुज न जाहिं हरियान ॥

यहिविधि सकल जीवजगरोगी । शोक हर्ष भय प्रीति वियोगी ॥
मानस रोग कछुक मैं गाये । हैं सबके लखि बिरलनि पाये ॥
जाने ते छीजहिं कछु पापी । नाश न पावहिं जन परितापी ॥
विषय कुपन्थ पाइ अंकुरे । मुनिन हृदय का नर बापुरे ॥
रामकृपा नाशहिं सब रोगा । जो इहि भांति बनै संयोगा ॥
सद्गुरु वैद्य वचन विश्वासा । संयम यह न विषय की आसा ॥
रघुपति भक्ति सजीवन मूरी । अनूपान श्रद्धा मति रूरी ॥
इहिविधि भले कुरोग नशाहीं । नाहिं तो यतनकोटिनाहिंजाहीं ॥
जानिय तब वह विरुज गोसांई । जब उर बल विराग अधिकाई ॥
सुमति क्षुधा बाढ़ै नित नई । विषय आश दुर्बलता गई ॥
विमल ज्ञानजल पाइ अन्हाई । तब रहु रामभक्ति उर छाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शिवअजशुकसनकादिकनारद । जो मुनि ब्रह्मविचार विशारद ॥
सबकर मत खगनायक येहा । करिय रामपदपङ्कज नेहा ॥
श्रुतिपुराण सदग्रन्थ कहाहीं । रघुपति भक्ति विना सुखनाहीं ॥
कमठ पीठ जामहिं बरु बारा । बन्ध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
फूलहिं नभ बरु बहुविधि फूला । जीव न लह सुख प्रभुप्रतिकूला ॥
तृषा जाइ बरु मृगजल पाना । बरु जामहिं शशशिश विषाना ॥
अन्धकार बरु रविहि नशावै । रामविमुख सुख जीव न पावै ॥
हिमते प्रकट अनल बरु होई । विमुख राम सुखपाव न कोई ॥

दो० वारि मथे बरु होइ घृत, सिकताते बरु तेल ।
बिनु हरिभजन न भवतरिय, यह सिद्धान्त अपेल ॥
मशकहि करहिं विरश्चि प्रभु, अजहिं मशकते हीन ।
अस विचारि तजि संशय, रामहिं भजहिं प्रवीन ॥

कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा । व्यास समास स्वमति अनुरूपा ॥
श्रुति सिद्धान्त इहै उरगारी । राम भजिय सबकाम बिसारी ॥
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही । मोसे शठपर ममता जाही ॥
तुम विज्ञानरूप नहिं मोहा । कीन्ह नाथ मोपर अतिछोहा ॥
पूछेउ रामकथा अतिपावनि । शुकसनकादिशम्भुमनभावनि ॥
सतसंगाति दुर्लभ संसारा । निमिष दण्ड भरि एकोबारा ॥
देखु गरुड़ निज हृदय विचारी । मैं रघुवीर चरण अधिकारी ॥
शकुनाधम सबभांतिअपावन । प्रभुमोहिंकीन्हविदितजगपावन ॥

दो० आजु धन्य मैं धन्य अति, यद्यपि सब विधि हीन ।
निजजन जानि राम मोहिं, सन्त समागम दीन ॥
नाथ यथामति भाखेउँ, राखेउँ कछु नहिं गोय ।
चरित सिन्धु रघुनाथकर, थाह कि पावै कोय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुमिरि रामके गुणगण नाना । पुनि पुनि हर्ष भुशुण्डि सुजाना ॥
महिमा निगम नेति कहि गाई । अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
शिव अज पूज्य चरण रघुराई । मोपर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस सुभाव कहुँ सुनौं न देखौं । केहि खगेश रघुपतिसम लेखौं ॥
साधक सिद्ध विमुक्त उदासी । कवि कोविद विरक्त संन्यासी ॥
योगी सुर अरु तापस ज्ञानी । धर्म निरत पण्डित विज्ञानी ॥
तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥
शरण गये मोसेउ अघराशी । होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी ॥

दो० जासु नाम भव भेषज, हरण घोर त्रयशूल ।
सो कृपालु मोहिंतोहिंपर, सदा रहहिं अनुकूल ॥
सुनि भुशुण्डिके वचनवर, देखि रामपद नेह ।
बोले गरुड़ सप्रेम अति, विगत मोह सन्देह ॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी । सुनि रघुवीर भक्ति रससानी ॥
राम चरण नूतन रति भई । मायाजनित विपति सबगई ॥
मोह जलधि बोहित तुम भयऊ । मोकहँ नाथ विविध सुखदयऊ ॥
मोसन होइ न प्रत्युपकारा । बन्दौं तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी । तुमसम तात न कोउ बड़भागी ॥
सन्त विटप सरितागिरि धरणी । परहित हेतु इन्हन की करणी ॥
सन्त हृदय नवनीत समाना । कहा कविनपैकहिनहिं जाना ॥
निजपरिताप द्रवै नवनीता । परदुख द्रवै सुसन्त पुनीता ॥
जीवन जन्म सुफल मम भयऊ । तव प्रसाद सब संशय गयऊ ॥
जानेहु मोहिं सदा निज किंकर । पुनिपुनि उमाकहैं सुविहंगवर ॥

दो० तासुचरण शिरनाइ करि, प्रेम सहित मतिधीर ।
गरुड़ गयो वैकुण्ठ तब, हृदय राखि रघुवीर ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गिरिजा सन्त समागम, सम न लाभ कछुआन ।
बिनु हरिकृपा होइ नहिं, गावहिं वेद पुरान ॥
कहेउँ परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवण छूटहिं भवपासा ॥
प्रणतकल्पतरु करुणा पुञ्जा । उपजै प्रीति राम पद कञ्जा ॥
मन वच कर्म जनित अघजाई । सुनै जो कथा श्रवणमनलाई ॥
तीर्थ अटन साधन समुदाई । योग विराग ज्ञान निपुणाई ॥
नाना कर्म धर्म व्रत दाना । संयम नियम यज्ञ जप नाना ॥
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई । विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥
जहँ लगि साधन वेद बखानी । सबकर फल हरिभक्ति भवानी ॥
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुतिगाई । राम कृपा काहू यक पाई ॥
दो० मुनिदुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरन्तर, सुनहिं मानि विश्वास ॥
सोइ सर्वज्ञ गुणी सब ज्ञाता । सोइ महिमण्डन पण्डित दाता ॥
धर्मपरायण सोइ कुलत्राता । रामचरण जाकर मन राता ॥
नीति निपुण सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धान्त नीक तेइजाना ॥
सोइ कविकोविद सोइ रणधीरा । जो छल छांड़ि भजै रघुवीरा ॥
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी । धन्य सो देश जहां सुरसरी ॥
धन्य सो भूप नीति जो करई । धन्य सो द्विज निजधर्म न टरई ॥
सो धन धन्य प्रथमगति जाकी । धन्य पुण्यरत मति सोइपाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसङ्गा । धन्य जन्म द्विज भक्ति अभङ्गा ॥
दो० सो कुल धन्य उमा सुन, जगत पूज्य सुपुनीत ।
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नरउपज विनीत ॥
मति अनुरूप कथा मैं भाखी । यद्यपि प्रथम गुप्तकरि राखी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई । तव मैं रघुपति कथा सुनाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहनहिंकहियशठहिंहठशीलहिं । जोमनलाइ न सुन हरिलीलहिं ॥
कहियनलोभिहिंक्रोधिहिंकामिहिं। जो न भजै सचराचरस्वामिहिं ॥
द्विजद्रोहिहिं न सुनाइय कबहूँ । सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ ॥
राम कथा के ते अधिकारी । जिनके सतसंगति अतिप्यारी ॥
गुरुपद प्रीति नीतिरत जोई । द्विजसेवक अधिकारी सोई ॥
ताकहँ यह विशेष सुखदाई । जाहि परम प्रिय श्रीरघुराई ॥
दो० रामचरण रति जो चहै, अथवा पद निर्वान ।
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवणपुट पान ॥
रामकथा गिरिजा मैं बरणी । कलिमलशमनमनोमलहरणी ॥
संसृति रोग सजीवनि मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
इहिमहँ रुचिर सप्त सोपाना । रघुपति भक्ति केर पथ नाना ॥
अति हरिकृपा जाहिपर होई । पांव देइ यहि मारग सोई ॥
मन कामना सिद्धि नर पावै । जो यह कथा कपट तजि गावै ॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपदइव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सब कथा हृदयअति भाई । गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथ कृपा मम गत संदेहा । रामचरण उपजा नवनेहा ॥
दो० मैं कृतकृत्य भयउँ अब, तव प्रसाद विहगेश ।
उपजी राम भक्ति दृढ़, बीते सकल कलेश ॥
यह शुभ शम्भु उमा संवादा । सुखद सदा अरु शमनविषादा ॥
भव भञ्जन गञ्जन सन्देहा । जन रञ्जन सज्जन प्रिय येहा ॥
राम उपासक जे जगमाहीं । इहसम प्रिय तिनकहँ कछुनाहीं ॥
रघुपति कृपा यथामति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
इहि कलिकाल न साधन दूजा । योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं । सन्तत सुनिय रामगुणग्रामहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जासु पतित पावन बड़बाना । गावहिं कविश्रुतिसन्तपुराना ॥
ताहि भजिय तजिमन कुटिलाई । राम भजे केहि गति नहिं पाई ॥

छं०पाई न गति केहि पतितपावन रामभज सुन शठ मना ।
गणिका अजामिल गृद्ध्र व्याध गजादिखल तारे घना ॥
आभीर यवन किरात खल श्वपचादि अतिअघरूप जे ।
कहि नाम बारेक तेपि पावन होत राम नमामि ते ॥
रघुवंशभूषण चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम रामधाम सिधावहीं ॥
शतपञ्च चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं ।
दारुण अविद्या पञ्चजनित विकार श्रीरघुपति हरैं ॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एकराम अकामहित निर्वाणपदसम आनको ॥
जाकी कृपा लवलेश तें मतिमन्द तुलसीदासहूँ ।
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥

दो० मोसम दीन न दीनाहित, तुम समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंशमणि, हरहु विषम भवपीर ॥
कामिहिंनारिपियारिजिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम ।
ऐसे होइके लागहू, तुलसी के मन राम ॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल-
वैराग्यसम्पादनोनामसप्तमस्सोपानः ॥ ७ ॥

इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विज्ञापन ॥

हमारे यहां हरप्रकार की पुस्तकें संस्कृत, भाषा, न्याय, धर्म, ज्योतिष, व्याकरण आदि की मिलसक्ती हैं सूचीपत्र मँगाकर देखिये—

नाम किताब	क़ीमत
रामायणमूल तुलसीकृत	।।।-)
बालकांड	।-)
अयोध्याकांड	=)।
आरण्यकांड	-)।
किष्किन्धाकांड	)।।।
सुन्दरकांड	)।।।
लंकाकांड	।)।
रामायण तुलसीकृत मध्यम मय रामाश्वमेध बातसवीर	१।)
तथा रंगीन मुजल्लिद	१।=)
रामायण टीका शुकदेवलाल पत्रानुमा छापा पत्थर	१।।।-)
तथा किताबनुमा हि. गु.	४)

नाम किताब	क़ीमत
रामायण भाषाटीका रामचरणदास	७)
तथा पत्रानुमा	४)
रामायण तुलसीकृत मोटे अक्षरों की काग़ज़ सफ़ेद गुन्दा	२।।।)
तथा ऊपर के अलंकारों सहित काग़ज़ सफ़ेद मामूली हिनाई	२।।)
तथा मय आठवां काण्ड रामाश्वमेध	३=)
तथा गुटका भाषाटीका	२)
रामायण कवितावली मूल	-)।।।
रामायण गीतावली मूल	=)।।।

मिलने का पता:-

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस-लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor